श्रुतज्ञानवर्धक विधान

रचयित्री – प.पू. श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माताजी

प्रकाशक – श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)

।। श्री आदिनाथाय नमः।।

आशीर्वाद : प. पू. आचार्य
१०८ श्री विमल सागरजी महाराज

आशीर्वाद : प. पू. आचार्य १०८
श्री सन्मति सागरजी महाराज

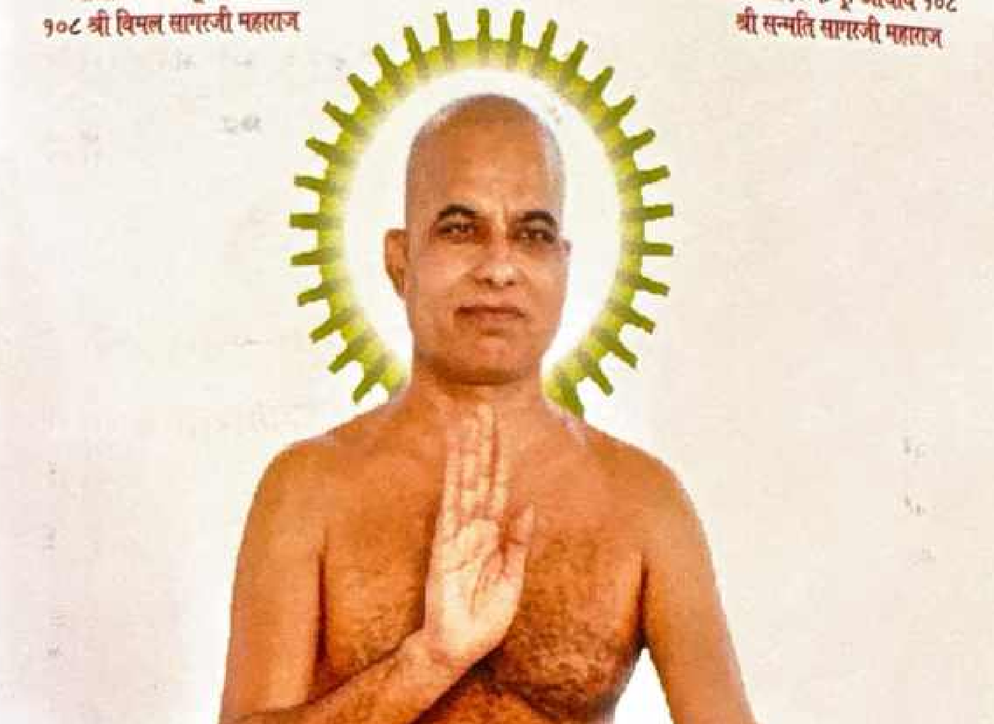

परम पूज्य श्रमणाचार्य गणाचार्य 108 श्री डॉ. विरागसागरजी महाराज

ॐ

श्रुतज्ञानवर्धक विधान

प.पू. गुरूणांगुरू वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज की
रजत समाधि दिवस समापन पर प्रकाशित

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

प.पू. युगप्रमुखश्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत
गणाचार्य डॉ. श्री 108 विरागसागरजी महाराज

रचयित्री

पू. श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री

प्रकाशक

श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)

ऐसे करें ज्ञान का विकास

(श्रुतज्ञानवर्धक विधान)

प्रवचनांश : 7.9.2012/जयपुर

प.पू. युग प्रमुख श्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत
गणाचार्य डॉ. श्री विरागसागर जी महाराज

आज आम जगत स्मृतियों के विषय में चिंतित हैं । यद्यपि आई.क्यू. बढ़ रहा है क्योंकि देखते हैं कि ढाई-तीन साल के बच्चे भी निर्भीक होकर इंग्लिश में बात करते हैं । लेकिन दूसरी ओर देखते हैं तो स्टूडेंट चिंता या टेंशन में रहते हैं कि हम कहीं किसी से पीछे न रह जाएँ । जब वे हमारे पास आते हैं तो यही आशीर्वाद माँगते हैं कि विद्या का विकास हो ।

तत्त्वार्थ सूत्र में मतिज्ञान के चार भेद गिनाए हैं, जिनमें पहला है अवग्रह । हमने वस्तु को देखा, समझने का प्रयास किया यानी प्राथमिक ज्ञान के विषय में सोच अवग्रह है । ईहा- जो देखा है उसके विषय में जिज्ञासा या प्रश्न खड़े होना चाहिए । कभी-कभी माता-पिता, बड़े भाई-बहन ही बच्चे के ज्ञान में अवरोधक बन जाते हैं। बच्चा अनेक प्रश्न करता है । माँ झल्ला जाती है और कहती है, शांत रह । जबकि माँ एक हजार टीचर के बराबर एक टीचर है । चाहे तो उसका समाधान करके प्रोत्साहित कर सकती थी । क्योंकि प्रारंभिक दशा में मेमोरी (स्मरण शक्ति) केन्द्रित रहती है । बाद में विभिन्न क्षेत्रों में बँट जाती है । अतः बच्चों को सही समाधान देने पर उनका ईहा ज्ञान विकसित होता है । इसे जिज्ञासा भी कह सकते हैं। अवाय - जिस विषय वस्तु का सही समाधान मिल जाता है वह जल्दी समझ में आ जाती है । धारणा - धारणा यानी स्मृति । विषय जितना अच्छा समझ में आता है, उतनी जल्दी धारणा (स्मृति) में बैठ जाता है । मात्र समझने का तरीका होना चाहिए । धारणा तक बात पहुँचना चाहिए । रिवीजन (चिंतन-मनन)- धारणा तक बात पहुँचने पर भी रोज-रोज विषय का रिवीजन आवश्यक है । चिंतन-मनन होना चाहिये, इसी का नाम है मनन या मति ।

जिस समय हम लोग मड़ावरा में थे, हमने देखा चिंतन-मनन एक सुलभ शौचालय के बाहर लिखा हुआ था । मेरे साथ एक सज्जन भी थे । वे बोले- महाराजश्री! आजकल व्यक्ति को चिंतन-मनन की फुर्सत यहीं मिलती है ।

बंधुओं ! चिंतन–मनन तो हर जगह हो सकता है, बस उपयोग की आवश्यकता है। खेल–खेल में भी विषय रिवीज़न हो सकता है। पर आज के खेल और पुराने खेलों में बहुत अंतर आ गया है। पहले के खेलों में नैतिक शिक्षा, कथा–कहानियों के माध्यम से सम्पूर्ण विषय आसानी से याद हो जाते थे। आज के खेलों में शिक्षा नहीं है। पहले के खेलों में शारीरिक के साथ–साथ नैतिक विकास का समावेश होता था।

साधुजनों के लिए भी इसीलिए कहा गया है –

'केलि करें श्रुतमाँहि, जिनेश्वर के लघुनंदन'

मुनिजन श्रुत में केलि करते हैं। शास्त्र–स्वाध्याय में बैठकर क्रीड़ा करते हैं अर्थात् प्रश्नोत्तर करते, गाथाएँ, प्रमाण सुनते–सुनाते। क्योंकि स्मृति में बैठाना आवश्यक है और यह तभी हो सकता है जबकि माइंड फ्रेश हो। मन प्रसन्न हो तभी चिंतन–मनन हो सकता है। इंदिरा गाँधी का विचार भी यही था। किसी से टेंशन में कहो – पुस्तक पढ़ो तो क्या पढ़ेगा अथवा पढ़ेगा भी तो क्या समझ में आएगा ? अतः आवश्यक है, ऐसे विषय में मत उलझो जो दिमाग का कीड़ा बन जाए। कहा भी जाता है – प्रश्न–पत्र में पहले सुगम प्रश्न हल करना चाहिये, बाद में कठिन। बाद में कठिन का भी रास्ता निकलेगा और नहीं भी निकला तो पास तो हो जाओगे।

स्मृति पर ज्यादा जोर नहीं डालना चाहिये क्योंकि स्मृति बहुत नाजुक होती है। कभी–कभी माता–पिता, टीचर आदि बच्चों के मन में हीनता खड़ी कर देते हैं जिससे वे डिप्रेशन में आ जाते हैं। अतः यदि बच्चा फेल भी हो जाए तो भी उसे परेशान न करें। संभालें और संभलने का अवसर दें। क्योंकि पहली बात है – वह अपने आप से घबरा गया है। उसे अपनों के बीच बैठना है, अपने सहपाठियों अथवा नए स्टूडेंटों के बीच बैठना है। परिवार, मोहल्ले के बीच बैठना है और वैसे ही लोग मिल जाएँ तो समाधान नहीं हो सकता। अतः समझाइये कि बेटा, आपको पढ़ना चाहिए था। फिर भी कोई बात नहीं, ये साल सबक लेकर आई है, एक दिन भी खराब नहीं होना चाहिये। इससे ज्ञान का विकास होता है, बुद्धि निर्मल होती है।

प्रत्यभिज्ञान – तर्क से ज्ञान विकसित होता है। चिंता यानी व्याप्ति के ज्ञान को चिंता कहते हैं। इसके साथ ही साथ आचार्य भगवन कहते है – अनुमान

अनुमान भी लगाना चाहिये । केवल पुस्तक तक ही सीमित न रहें । जिस बच्चे ने 2+2=4 पढ़ा है और पेपर में 3+1=? पूछा जाए तो घबरा जाएगा । जो पढ़ाया गया है उसके अलावा आगे बढ़ने का भी प्रयास करें । यह ज्ञान-विकास हेतु महत्वपूर्ण अवस्था है । देर रात तक कदापि न जगें । चाहे पढ़ाई के लिए हो या टीवी देखने के लिए । क्योंकि एनर्जी वेस्ट करोगे तो स्मृतियाँ नहीं रह पाएँगी । इसलिए पुराने समय में जल्दी सोने और जल्दी उठने की बात की जाती थी । ब्रह्म मुहूर्त में मस्तिष्क थका नहीं, अपितु फ्रेश रहता है । ब्रह्म मुहूर्त जैसी महत्वपूर्ण बेला दूसरी नहीं हो सकती । अतः जल्दी सोने का अभ्यास करना चाहिये । साथ ही साथ डिप्रेशन, टेंशन, कषायों को जीतने का प्रयास करना चाहिये । डिप्रेशन कषाय को जीतने का सरल तरीका है-

1. यदि कोई आपकी गलती बताता है तो उसे सहजता से स्वीकार करो । हमारे धर्म सूत्रों में 'मिच्छा से दुक्कड' सूत्र इसी का प्रतीक है ।
2. दूसरों के प्रति नम्र व्यवहार करें । क्षमा माँगने और करने में कभी पीछे न हटें। क्षमा से ज्ञान विकसित होता है । क्रोध बुद्धि को खा जाता है । अतः बदले या क्रोध की बुद्धि न रखें ।

बाह्य महत्वपूर्ण कारण है, अनाब-शनाप पदार्थों का सेवन न करें । धूम्रपान, तम्बाकू आदि धीरे-धीरे मस्तिष्क की नसों में जाकर ज्ञान तंतु अवरुद्ध कर देते हैं । श्रुत ज्ञान के विकास के इन तरीकों को अपनाकर जीवन सार्थक और सफल करें ।

विनयांजलि एवं विधान-विधि

'णाणं णरस्स सारो' ज्ञान नरजन्म का सार है। यदि नर जन्म पा लिया और नर जन्म में भी सब कुछ पाया पर सम्यक् ज्ञान नहीं हो सका तो नर जन्म पाना बेकार है। इसलिए छोटी-सी अवस्था से प्रयत्न किया जाता है। ज्ञानाभ्यास किसी साधना और तपस्या से कम नहीं है। ज्ञान के लिए लौकिक सुखों का त्याग करना पड़ता है। एक सुभाषित में आया है –

सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतो सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्या, विद्यार्थी वा त्यजेद् सुखम् ।।

सुखार्थी के पास विद्या कहाँ और विद्यार्थी के पास सुख कहाँ ? सुखार्थी को चाहिए कि विद्या त्यागे और विद्यार्थी को चाहिए कि सुख त्याग दे।

वर्तमान शिक्षा ने तो कॉम्पीटिशन और प्रोग्रेस की ऐसी लंबी दौड़ प्रारंभ कर दी है जिसमें हर विद्यार्थी शामिल होना चाहता है और शामिल ही नहीं, फर्स्ट डिवीजन और फर्स्ट पोजीशन में आना चाहता है। लेकिन ऐसे भी विद्यार्थी हैं जो दिन-रात एक करके भी कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते। आचार्य बताते हैं कि ज्ञानावरणी कर्म के प्रबल उदय में कोई प्रयास सफल नहीं हो पाता। लेकिन फिर भी घबराने की आवश्यकता नहीं और न ही पुरुषार्थ विहीन होकर बैठने की आवश्यकता है क्योंकि श्रुत की आसादना से श्रुतज्ञानावरणीय कर्म बँधता है तो श्रुत की आराधना और विनय से धुलता भी है।

इसी आशय को लेकर जीवंत समयसार, उपसर्ग विजेता, युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक, श्रीमद् कुंदकुंदाचार्य के 2000 वर्ष पुरातन ग्रंथों 'बारसाणुपेक्खा' और 'रयणसार' पर प्रथम संस्कृत टीका लिखने वाले, चारों अनुयोगों के मर्मज्ञ विद्वान पंडित, राष्ट्रसंत, युग प्रमुख श्रमणाचार्य, गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज ने जयपुर चातुर्मास 2012 के अंतर्गत परम पूज्य

गुरुणां गुरु, वात्सल्य रत्नाकर, आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज की जन्म जयंती के अवसर पर मुझे श्रुतज्ञानवर्धक विधान लिखने की प्रेरणा और आज्ञा दी। गुरु आज्ञा पाकर किसका मन प्रसन्न नहीं होता ? मुझे भी आंतरिक प्रसन्नता हुई। गुरुवर के आशीर्वाद से शीघ्र ही विधान लिखा और 7.9.2012 को अनेक विद्यार्थियों के मध्य विधान आयोजित हुआ। पुनः छत्रपति नगर में श्रुत पंचमी 2013 को विधान हुआ। इस दिन ही सर्वोदया टीका की पाँचवीं वर्षगाँठ के पावन प्रसंग पर यह विधान प्रकाशित करवाने की भावना जगी और अब यह कार्य पूर्ण हो सका।

विधान की विधि

7.9.2012 को दिए गए पूज्य आचार्यश्री के प्रवचन अवश्य पढ़ें। विधान में सफलता हेतु आवश्यक है - (1) अष्ट मूलगुण (2) नित्य देव दर्शन (3) सप्त व्यसन त्याग (4) देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धा।

यद्यपि विधान सर्वोपयोगी है, कोई भी श्रुतज्ञानवर्धन हेतु कर सकता है पर विद्यार्थी अवश्य इसे करें। वर्ष में श्रुत पंचमी या अन्य किसी दिन भी कर सकते हैं। विद्यार्थी 21 पिस्ता लेकर श्वेत वस्त्र में विधान में बैठें। विधान के अंत में 48 बुद्धि-ऋद्धि मंत्र दिए गए हैं जिनकी उच्चारण के साथ पुष्पांजलि क्षेपण करें। तदुपरांत हाथ में 21 पिस्ता लेकर पंच नमस्कार मुद्रा के साथ मंत्रित करें और प्रतिदिन - 'ॐ ह्रीं अर्हत्मुखोद्भव श्रुताय नमः मम ज्ञानवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा' मंत्र का कम से कम 9 बार पढ़कर एक-एक पिस्ता भोजन के पहले खाएँ, ज्ञानवृद्धि अवश्य होगी।

नोट : यद्यपि उपरोक्त विधि किसी शास्त्र में नहीं आई है, फिर भी आजकल बच्चे विद्या प्राप्ति के लिए यहाँ-वहाँ (मिथ्यात्व) भटक रहे हैं या सफल न होने पर आत्मघात के अनुचित मार्ग पर जा रहे हैं। उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए यह विधि दी गई है। श्रुत की विनय, पूजन व अभ्यास से श्रुतवर्धन भी अवश्य होगा, ऐसा विश्वास रखें।

पंच नमस्कार मुद्रा

योगासन की यह प्रणाली ध्यान के साथ योग की ओर ले जाती है।

1. सिर के चार भागों के मध्य में हाथ जोड़कर अरिहंतो नमस्कार करें। उसके पीछे सिद्धों को दाहिनी साईड में आचार्यों को, बाईं साईड में उपाध्यायों को और आगे हाथ जोड़कर साधु परमेष्ठी को नमस्कार करें।

   लाभ : इस मुद्रा से मन-वचन-काय शुद्ध होते हैं और शक्ति प्राप्त होती है जो श्रुतज्ञान के विकास में अति आवश्यक है।

2. नाक के अग्र भाग पर अरिहंतों को, ललाट पर सिद्धों को, दाहिने भाग पर आचार्यों को, बांई ओर उपाध्यायों को, मुख पर सर्व साधु को नमस्कार करें।

   अथवा

   दोनों भौंहों के बीच विशुद्धि चक्र पर अरिहंतों को, तालू पर सिद्धों को, दाहिने कान पर आचार्यों को, बाँए कान पर उपाध्यायों को, ठोड़ी पर सर्व साधु को नमस्कार करें।

   लाभ : आँख, कान, नाक, मुख इत्यादि अंगों को शक्ति मिलती है।

3. हृदय पर अरिहंतों को, सिर के ऊपरी भाग में सिद्धों को, दाहिने कंधे पर आचार्यों को, बाएँ कंधे पर उपाध्यायों को और नाभि पर सर्व साधु को नमस्कार करें।

   लाभ : हृदय, मस्तिष्क, कंधों और नाभि चक्र को शक्तिशाली बनाता है।

4. नाभि के अग्र भाग पर अरिहंतों को, ललाट पर सिद्धों को, दांई आँख पर आचार्यों को, बांई आँख पर उपाध्यायों को एवं मुख पर सर्व साधु को नमस्कार करें।

5. हृदय पर अरिहंतों को, मस्तम पर सिद्धों को, दाएँ कंधे पर आचार्यों को, बाँए कंधे पर उपाध्यायों को और नाभि पर सर्व साधु को नमस्कार करें।

इस पंच नमस्कार मुद्रा से तन-मन ही नहीं आत्मा भी पुनीत होती है। उपयोग स्थिर रहता है और उपयोग की स्थिरता से लक्ष्य प्राप्ति आसान हो जाती है।

अंत में परम पूज्य गुरुदेव के करकमलों में यह विधान समर्पित करते हुए यही भावना भाते हैं कि हे गुरुवर ! आपकी कृपा वृष्टि और कृपादृष्टि सदैव हम पर बनी रहे । श्रुतदेवी सरस्वती माँ सबका कल्याण करें –

अंजन बना निरंजन था
महामंत्र के चंदन से
श्रद्धा में बल है इतना
कार्य पूर्ण हो वंदन से
श्रुत संरक्षण, श्रुत विकास हो
'श्रुत वर्धक विधान' रचें
आओ मिलकर श्रुत को ध्याएँ
श्रुत अविनय से नित्य बचें ।।

–गुरु चरणानुरागी – श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री

अनुक्रमणिका

1.	श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्	12
2.	मंत्र	14
3.	माघनन्दिमुनिकृताभिषेक पाठः	18
4.	वृहत् शान्तिधारा पाठ	22
5.	विनय पाठ	25
6.	पूजा पीठिका	27
7.	पूजा प्रतिज्ञा पाठ	29
8.	स्वस्ति मंगल पाठ / परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ	30
9.	नवदेवता पूजन	32
10.	अर्घावली	36
11.	जिनवाणी पूजन / श्रुतज्ञानवर्धक विधान	41
12.	बुद्धिवर्द्धक ऋद्धि मंत्र	60
13.	सर्वोदया टीका पूजन	62
14.	समतामूर्ति गुरूवर विराग गुरु पूजन	66
15.	महार्घ्य	70
16.	आ. श्री का परिचय	
17.	सत् साहित्य प्रकाशन सूची	75

श्री श्रुतज्ञानवर्धक विधान

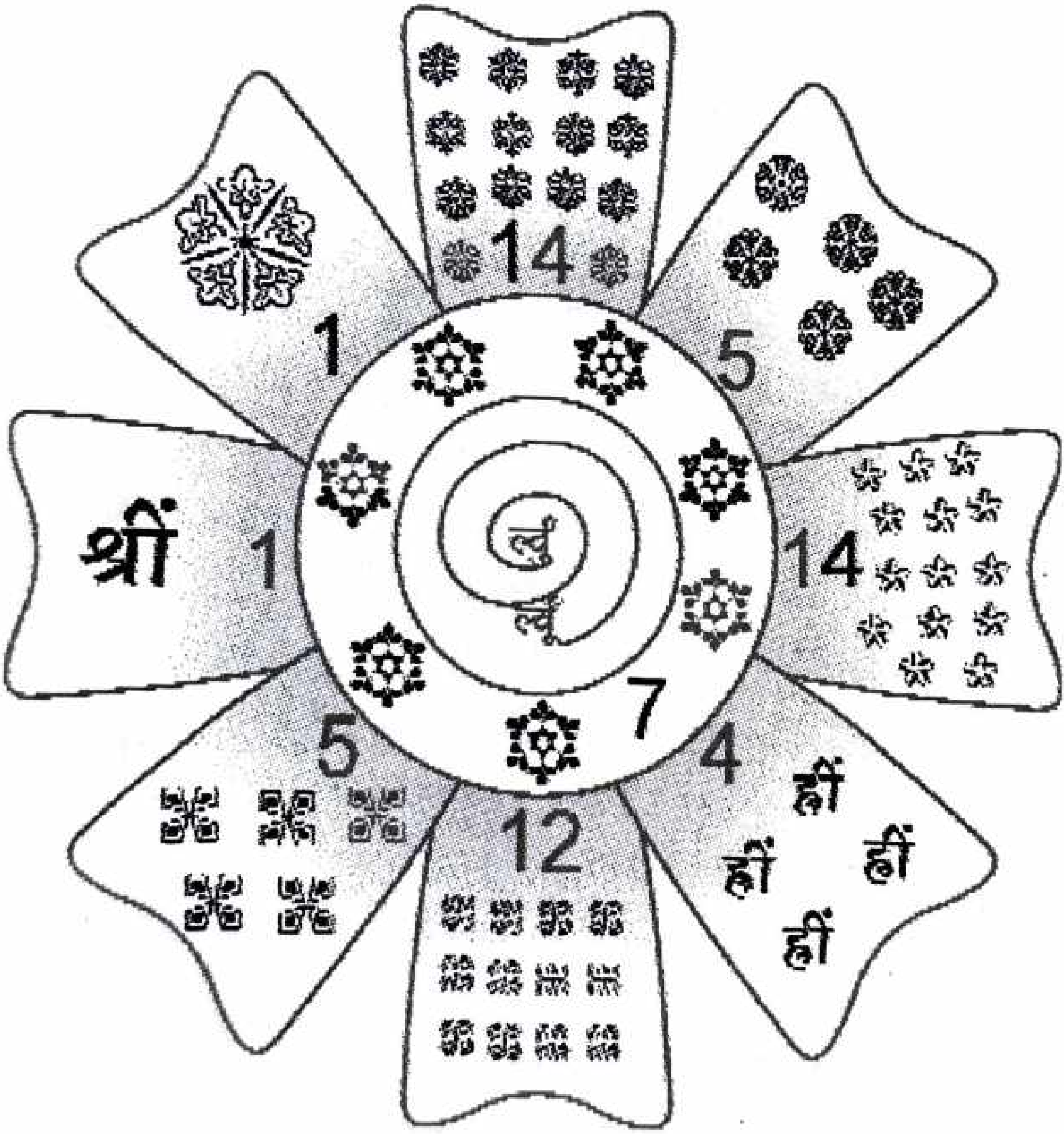

श्री मंगलाष्टक स्तोत्रम्

(शार्दूल विक्रीडित)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।1।।

श्रीमन्नम्र–सुरा – सुरेन्द्र – मुकुट – , प्रद्योत – रत्नप्रभा,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वेजिन – सिद्ध – सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।2।।

सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति श्री नगराधिनाथ – जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं, चैत्यालयः श्रयालयः,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।3।।

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिश्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर – प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णुप्रतिविष्णु लाङ्गलधराः, सप्तोत्तराविंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।। 4।।

देव्योऽष्टो च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकरा मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तया।
द्वात्रिंशत त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा, दिक्कन्य काश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश–चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वतु ते मंगलम् ।।5।।

ये सर्वौषधि–ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश, चाष्टौ वियश्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,

सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।। 6।।

ज्योतिर्व्यन्तर – भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा, वक्षार रूप्याद्रिषु ।
इष्वाकार – गिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।7।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।8।।

सर्पो हारलता भवत्यसिलता, सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि, प्रीतिं विधत्ते रिपुः ।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः, किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।9।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुर – प्रवेश – महिमा, सम्पावितः स्वर्गिभिः
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।10।।

इत्थं श्रीजिन – मंङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्य – सम्पत्करं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्, तीर्थंकराणामुषः ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै, र्धमार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।11।।

दिग्बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें ।)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें ।)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें ।)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें ।)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशातः समागतविघ्नान् निवारय-निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(यह मंत्र पढ़कर सर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें ।)

परिणाम शुद्धि मंत्र

विधि विधातुं यजनोत्सवेऽहं, गेहादिमूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचित्ताकृतिमादधामि, स्वर्गादिलक्ष्मीमपिहापयामि ।।

यह पढ़कर पात्रों से गृहस्थी के कार्यों से प्रकृत उत्सवपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा कराई जाए ।

अंगन्यास विधि

मंगलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और तत्तद् दिशाओं से आने वाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अंगन्यास किया जावे । दोनों हाथों के अंगुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यंत पाँचों अंगुलियों में क्रम से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठी की स्थापना की जावे । जप या हवन में बैठने वाले

महाशय सर्वप्रथम दोनों हाथों को अंगूठों की बराबरी से मिलाकर सामने करें। तथा–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

इस मंत्र का उच्चारण कर उन अंगुष्ठों पर शिर झुकावें। फिर दोनों हाथों की तर्जनियों (अंगूठा के पास की अंगुलियों) को बराबरी से मिलाकर सामने करें और –

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर तर्जनियों पर शिर झुकावें। फिर बीच की दोनों अंगुलियों को मिलाकर सामने करें और –

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर मध्यमाओं पर शिर झुकावें। फिर दोनों अनामिकाओं को मिलाकर सामने करें और –

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर अनामिका पर शिर झुकावें। फिर दोनों कनिष्ठाओं को मिलाकर सामने करें और –

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठा पर शिर झुकावें। फिर दोनों हथेलियों को बराबर सामने फैलाकर –

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर करतलों (गदियों) पर शिर झुकावें। फिर दोनों कर पृष्ठों को बराबर सामने फैलाकर –

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः ।

यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के ऊपरी भाग पर शिर झुकावें।

तदनंतर

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सिर का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वंदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर मुख का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर हृदय का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर नाभि का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पैरों का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर शरीर का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर वस्त्रों का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूजा की सामग्री का स्पर्श करें। फिर –

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर फेकें।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्ली ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्राव्य द्राव्य ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

इस मंत्र से चुल्लू के जल को मंत्र कर अपने शिर पर सींचे।

रक्षासूत्रबन्धन

ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य पात्रों को रक्षासूत्र (सूत) बाँधें

तिलककरण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु।

यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगाएँ।

रक्षामंत्र

ॐ नमो अर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मंत्रित कर सभी पात्रों पर

प्रेक्षित किया जाए।

शांति मंत्र

ॐ क्षूं हूं फट् किरीट घातय घातय, परविघ्नान्, स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु कुरु, परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

इस मंत्र से भी पीले सरसों या चावलों को तीन बार मंत्रित कर सभी पात्रों पर प्रक्षेप किया जावे।

यज्ञोपवीत धारण मंत्र

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयचिह्न यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पुरुष पात्रों को 'यज्ञोपवीत' धारण कराएँ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिमन्त्र सर्वांगशुद्धिः भवतु।

यह मंत्र पढ़कर पात्रों पर जल छिड़ककर उनकी अंतिम शुद्धि की जाए।

मंगलकलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् विधीयमानेमहोत्सवकर्मणि .... श्री वीरनिर्वाण संवत्सरे .... मासे .... पक्षे .... तिथौ .... वासरेप्रशस्तलग्ने .... कार्यस्यनिर्विघ्न समाप्त्यर्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत- श्रीफलादि शोभितं- मंगलकलश स्थापनम् करोमि। श्रीं ह्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

नोट : यह पढ़कर मंडल के उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगल कलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

दीपस्थापना मंत्र

रुचिर दीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोक सुखाकर मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं शिवदं सदा, इह धरामि सुमंगलकंमुदा ॥
ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माघनन्दिमुनिकृताभिषेक पाठः

श्रीमन्नतामर शिरस्तट रत्नदीप्ति-
तोयावभासि चरणाम्बुज युग्म-मीशम ।
अर्हत मुन्नत पद प्रदमाभिनम्य
तन्मूर्तिषद्यदभिषेक विधिं करिष्ये ।।1।।

अथ पौर्वाह्विक/माध्याह्विक/ अपराह्विक देववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वंदना स्तव समेतम् श्री पंचमहागुरु भक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें ।)

याः कृत्रिमास्तदितरा प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्-
तत्रैव मुज्ज्वलधिया कुसुमम् क्षिपामि ।।2।।

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें ।)

श्रीपीठक्लृप्ते विषदाक्षतोघैः श्रीप्रस्तरे पूर्णशशांककल्पे ।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तासत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री लेखनं करोमि ।

कनकादिनिभं कम्रं पावनं पुण्य कारणम् ।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठ स्थापनं करोमि ।

(यह पढ़कर अभिषेक की थाली में सिंहासन स्थापित करें ।)

भृंगार चामर सुदर्पण पीठ कुंभ-
तालध्वजातप निवारक भूषिताग्रे ।
वर्धस्व नंद जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन ! भवंतमहं श्रयामि ।।5।।

वृषभादि–सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान् ।
स्थापयाम्याभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम् ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह पाण्डुकशिला पीठेसिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।

(यह पढ़कर प्रतिमाजी विराजमान करें)

श्रीतीर्थकृत्स्नपन वर्य विधौ सुरेन्द्रः –
क्षीराब्धि–वारिभि–रपूरय–दुद्ध कुम्भान् ।
याँस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम–चंदन–भूषि–ताग्रान ।।7।।

शातकुम्भीयकुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोयपूरितान् ।
स्थापयामि जिनस्नानचन्दनादिसुचर्चितान् ।।8।।

ॐ ह्रीं चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि ।

(चौकी पर चार दिशा में चार कलश स्थापित करें ।)

आनन्द– निर्भर– सुर– प्रमदादि– गानै–
र्वादित्र पूर जयशब्द कल प्रशस्तैः ।
उद्गीयमान जगतीपति कीर्ति मेनां,
पीठ स्थलीं वसुविधार्चन योल्लसामि ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री स्नपन पीठस्थिताय जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(यह पढ़कर अर्घ चढ़ाएँ तथा वादित्र या घंटा आदि का शब्द करते हुए जयजयकार करें ।)

कर्म प्रबंध निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादि देवं ।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव ।
शुद्धोदकैरभि नयामि महा–भिषेकम् ।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा ।

तीर्थोत्तम भवै नीरैः क्षीर वारिधि रूपकैः ।
स्नपयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान् ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा ।

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः ।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपिनृणां
प्रभवतिहिविदधातुं भुक्ति-सन्मुक्तिलक्ष्मीम् ।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं हः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रः ह्रौ ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि ।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें ।)

पानीय- चन्दन- सदक्षत- पुष्प पुन्ज-
नैवेद्य- दीपक- सुधूप- फल- व्रजेन ।
कर्माष्टक- क्रथन- वीर- मनंत- शक्तिं
संपूजयामि महसा महसां निधानम् ।।13।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे तीर्थपा निज-यशो-धवली-कृताशाः
सिद्धौष-धाश्च भव दुःख-महा-गदा-नाम् ।
सद्भव्य-हृज्जनित - पंक-कबंध कल्पा
यूयं जिनाः सतत्-शांतिकरा भवन्तु ।।14।।

(यह पढ़कर शांति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें ।)

नत्वा मुहु-र्निज करै- रमृतोप मेयैः
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करा-वदातैः ।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितांत-रम्ये
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि ।।15।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि ।
(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी का परिमार्जन करें।)

स्नानं विधाय भवतोऽष्ट सहस्र–नाम्ना–
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम् ।
जिघृक्षु–रिष्टि–मिन तेऽष्ट तयीं विधातुम्,
सिंहासने विधि–वदत्र निवेशयामि ।।16।।

(यह पढ़कर प्रतिमाजी को सिंहासन पर विराजमान करें ।)

जल–गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु–दीप–सुधूपकैः ।
फलै–रर्घै–र्जिनमर्चेज्, जन्मदुःखापहानये ।।17।।

ॐ ह्रीं पीठस्थिताय जिनायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
(यह पढ़कर अर्घ चढ़ावें)

नत्वा परीत्य निज–नेत्र–ललाट–योश्च
व्यातु–क्षणेन हरता–दघ संचयं मे ।
शुद्धो–दकं जिनपते तव पाद–योगाद्
भूयाद्–भवातपहरं धृत–मादरेण ।।18।।

मुक्ति–श्रीवनिता–करोदक–मिदं, पुण्याङ्–कुरोत्पादकं
नागेन्द्र–त्रिदशेन्द्र–चक्रपदवी, राज्याभि–षेकोदकम् ।
सम्यग्ज्ञान– चरित्र– दर्शन– लता, – संवृद्धि– संपादकं
कीर्ति–श्रीजयसाधकं तव जिन–स्नानस्य गंधोदकम् ।।19।।

(यह पढ़कर गन्धोदक सिर पर लगाएँ ।)

इमे नेत्रे जाते सुकृत–जल–सिक्ते–सफलिते
ममेदं मानुष्यं कृति–जन–गणा–देय–मभवत् ।
मदीयाद् भल्लाटा–दशुभतर कर्माटन–मभूत्
सदेदृक् – पुण्याहर्मम भवतु ते पूजनविधौ ।।21।।

(यह पढ़कर पुष्पाँजलि छोड़ें ।)

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमः सिद्धेभ्य ॐ नमः सिद्धेभ्य ॐ नमः सिद्धेभ्य, श्री वीतरागाय नमः,
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं!!

ॐ ह्राँ नमः सर्वार्हदेभ्यः, ॐ ह्रीं नमः सर्व सिद्धेभ्यः, ॐ हूँ नमः सर्वाचार्येभ्यः ॐ ह्रौं नमः सर्वोपाध्यायेभ्यः ॐ ह्रः नमः सर्व साधुभ्यः त्रिचत्वारिंशताधिक शत गुणयुक्त पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

श्री वीतरागाय, सर्वज्ञाय, सर्व हितंकराय, जिनाय, तीर्थकराय, देवाधिदेव श्री (भगवान का नाम बोलें) मम (अपना नाम बोलें) मिथ्यात्वं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मिथ्यादर्शनं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मिथ्याज्ञानं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मिथ्यारूचिं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मिथ्याचारित्रं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। देवमूढतां छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। लोकमूढ़तां छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। पाखण्डमूढ़तां छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। शंकादिदोषं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। ज्ञानादिमदं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। क्रोधं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मानं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। मायां छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। लोभं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। हिंसापापं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। अनृतपापं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। स्तेयपापं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। कुशील पापं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। परिग्रहपापं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। दुर्व्यसनं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। दृष्टिदोषं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। सर्वशत्रुविघ्नं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। सर्व आधिं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। सर्व व्याधिं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। सर्वदारिद्रं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। कुसंगति भावं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। वैरं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। विसंवादं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। ईर्ष्यां छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। विरोधं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। विद्वेषं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। अन्यायं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। भ्रष्टाचारं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। अत्याचारं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। अनाचारं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। दुराचारं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। राजभयं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। चौरभयं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। दुष्टभयं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। आतंकवाद भयं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। संतवादं छिन्दि–छिन्दि भिन्दि–भिन्दि। संघवादं

सर्वभव्यानन्दनं कुरू–कुरू। सर्व ग्रामानन्दनं कुरू–कुरू। सर्व नगरानन्दनं कुरू–कुरू। सर्व देशानन्दनं कुरू–कुरू। सर्व राष्ट्रानन्दनं कुरू–कुरू। सर्व विश्वानन्दनं कुरू–कुरू। सर्वानन्दनं कुरू–कुरू स्वाहा।

सर्वलोके सुखं यान्ति सर्वविघ्नविनाशनं! आरोग्यं धनं धान्यं धर्म मंगल सदास्तु मे ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री (भगवन का नाम बोलें) मम (अपना नाम बोलें) श्री धर्मवृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, शान्तिरस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, पुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु, दीर्घायुरस्तु, कुल–गोत्र–धन धान्यं–सदास्तु, बलवृद्धिरस्तु, ऐश्वर्याभिवृद्धिरस्तु, मातृ–पितृ–भातृ–भगिन्या–कलत्र–पुत्र–दुहिता–सहृदृयादि– समस्त– बन्धुवर्गाश्च सर्व शान्ति कुरू–कुरू स्वाहा ...।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्व शान्ति कुरू–कुरू स्वाहा–3।

मुन्यार्यिका – श्रावक – श्राविकाश्च, जिनेन्द्र भक्तं च योगीन्द्र भक्तं।
सुशासकानां व प्रशासकानां, करोति शान्ति महावीर सर्व।।
जिनपूजकानां गुरू उपासकानां, मुनिनायकानां, तपसाधकानां।
राजा प्रजानां वा प्रतिराष्ट्रकाणां, करोति शान्तिं भगवज्जिनेन्द्र:।।

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज ।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज ।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ।।3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म-प्रकाश ।
थिरता-पद दातार हो, धरता निज गुण रास ।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप ।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निरमल भाव ।
कर्म बन्ध के छेदने, और न कोई उपाव ।।6।।

भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार ।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भण्डार ।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल ।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल ।।8।।

तुम पद-पङ्कज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ।।9।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन ।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अञ्जन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ।।12।।

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ।।13।।

राग सहित जग में रूल्यो, मिले सरागी देव ।
वीतराग भेटयो अबै, मेटो राग कुटेव ।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान ।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव ।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार ।
हा ! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ।।19।।

जो मैं कहू हूँ, और सौं, तो न मिटे उरझार ।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करत पुकार ।।20।।

वन्दौं पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वन्दत जास ।
विघनहरन मङ्गलकरन, पूरन परम प्रकाश ।।21।।

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।।22।।

मङ्गल मूरत परम पद, पञ्च धरौं नित ध्यान ।
हरो अमङ्गल विश्व का, मङ्गलमय भगवान ।।23।।

मङ्गल जिनवर पद नमौं, मङ्गल अर्हन्त देव ।
मङ्गलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव ।।24।।

मङ्गल आचारज मुनि, मङ्गल गुरु उवझाय ।
सर्व साधु मङ्गल करो, वन्दौं मन-वच-काय ।।25।।

मङ्गल सरस्वती मात का, मङ्गल जिनवर धर्म ।
मङ्गलमय मङ्गल करो, हरो असाता कर्म ।।26।।

या विधि मङ्गल से सदा, जग मे मङ्गल होत ।
मङ्गल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत ।।27।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपें ।

पूजा पीठिका

ओम् जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु ।।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहूलोगुत्तमा केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः ॥2॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशन : ।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥3॥
एसो पंच-णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥5॥
कर्माष्टक- विनिर्मुक्तं मोक्ष - लक्ष्मी- निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनी- भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र - मभि - वंद्य - जगत् - त्रयेशं,
स्याद्वाद- नायक- मनंत- चतुष्ट-यार्हम् ।
श्री मूल संघ-सुदृशां सुकृतैक-हेतु
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेषमयाऽभ्य-धायि ।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश- सह-जोर्ज्जित- दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न- ललिताद्भुत-वैभवाय ।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधा प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभास-काय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिका-मधि-गंतुकामः ।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ।।4।।

अर्हन् पुराण - पुरुषोत्तम - पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिञ्-ज्वलद्विमल-केवल बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्रीसुमितः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचंदप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः ।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः ।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुतकेवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्ययशुद्धबोधाः ।
दिव्यावधि-ज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, सम्भिन्न-संश्रोतृपदानुसारि ।
चतुर्विधं बुंद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक-बुद्धाः दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः, स्वस्ति कियासुः परमर्षयो नः ।।

जंघानलश्रेणि-फलाम्बु-तन्तु-प्रसून-बीजाङ्कुर-चारणाह्वाः ।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि ।
मनो-वपु-र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर-पराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्चः ।
सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोग नः ।

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधुस्रवंतोऽयमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसम्वासमहानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।

।। इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान ।।

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

नवदेवता पूजन

(गीता छंद)

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं ।
जिनधर्म जिन आगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं ।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें ।
आह्वान कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा धरें ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

गंगा नदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा ।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूँ सदा ।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन देह, ताप निवारता ।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता ।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें ।
सब सिद्धि नवनिधि ऋद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें ।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधि के फेन सम सित तंदुलों को लायके ।
उत्तम अखंडित सौख्यहेतु, पुंज नव सुचढ़ायके ।।नव.।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये ।
भवके विजेता आपको, पूजन सुमन अर्पण किये ।।नव.।।

ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में ।
निजआत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहुँ नतभाल मैं ।।नव.।।
ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में ।
तुव आरती तमवारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं ।।नव.।।
ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दश गंध धूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा ।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्मसब मुझसे विदा ।।नव.।।
ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में ।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं ।।नव.।।
ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले ।
वर रत्नत्रयनिधि लाभ यह बस अर्घ्यसे पूजतमिले ।।नव.।।
ॐ ह्रीं नवदेवेभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा – जलधार से नित्य मैं, जग की शांति हेत ।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत ।।
(शांतये शांतिधारा)

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय ।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय ।।
(दिव्य पुष्पाञ्जलिः क्षिपामि)

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु–जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।
(इस मंत्र का 9 या 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

(सोरठा)

जय जय श्री अरिहंतदेव देव हमारे ।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे ।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ ।।1।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं ।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं ।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी ।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी ।।2।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा ।
निज आतमा की साधना से च्युत न हों कदा ।
ये पंच परम देव सदा वंद्य हमारे ।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें ।।3।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा ।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा ।।
जिनकी ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे ।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे ।।4।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं ।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं ।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें ।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें ।।5।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें ।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें ।।

मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ ।
संपूर्ण 'ज्ञानमती' सिद्धि हेतु ही भजूँ ।।6।।

दोहा

नव देवों को भक्तिवश, कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चहूँ, निज पद में विश्राम ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागम जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं नि. स्वाहा ।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से नव देवता पूजा करें ।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें ।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते ।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहां पर कभी न आवते ।।8।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अर्घ्यावली

श्री देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ

जल परम उज्जवल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूं ।।
इहि भांति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं ।
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूं ।।
वसुविधि अर्घ संजोय के, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकर का अर्घ

जलफल आठों द्रव्य अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहूतैं थुति पूरी न करी है ।
द्यानत सेवक जानके हो जगतें लेहु निकार,
सीमन्धर जिन आदि दे स्वामी बीस विदेह मँझार ।
श्री जिनराज हो भव तारण तरण जहाज ।।

ॐ ह्रीं श्रीसीमन्धरादिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्, नित्यं त्रिलोकीगतान् ।
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा-वासगान् ।।
सद्-गन्धाक्षत-पुष्पदामचरुकैः सद्दीप धूपैः फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये ।।
सात करोड़ बहत्तर लाख, सु-भवन जिन पाताल में ।
मध्यलोक में चारसौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के ।।

अब लखचौरासी सहस सत्यावन, अधिक तेइस रु कहे ।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे ।।
ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्ध भगवान का अर्घ

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणैः, संङ्ग वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं, रम्यं चरुं दीपकम् ।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं, श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम् ।।
ॐ ह्रीं सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि. स्वाहा ।

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपो भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ।।
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनन्दकंद सही
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही ।।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है,
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोड़ कीना है ।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दस ताँ विषैं छाजै,
सातशत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सब भाजै ।।
ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत इन दस क्षेत्रों में भूत-भविष्यत्-वर्तमान संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेंद्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गंध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय ।
दीप धूप फल अर्घ सुलेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि बलि जाऊँ मन वचकाय ।
हे करुणानिधि भव दुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टम जिन मीत अष्टम अवनि गमों ।।
श्री चन्द्रनाथ दुति चन्द, चरनन चंद लगै,
मन-वच-तन जजत अमंद, आतम जोति जगै ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ

जल फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ।।
वासुपूज्य वसुपूज-तनुज पद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिग धारी, आनंदकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुणाधारी, यातै थारी शरनारी ।।
श्रीशान्ति-जिनेशं नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं ।
हनि अरि चक्रेशं हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरव निरधार, उत्तम सो उत्तम लिये ।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ ।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्त्ये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरव संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना ।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना ।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरू फल, दीप धूपायन धरौं ।
'द्यानत' करो निरभय जगत सों, जोर कर विनती करों ।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा पावापुर कैलाश कों ।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस्वती माता का अर्घ

जल चंदन अक्षत फूल चरू, अरु दीप धूप अति फल लावे ।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुखपावे ।।

तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन-मानी पूज्य भई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिन-मुखोद्भव-सरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पूज्य राष्ट्रसंत गणाचार्यश्री 108 विरागसागर जी महाराज का अर्घ्य

शुभ भावों का निर्मल जल है, विनय भाव का है चंदन,
गुरु वंदन ही अक्षत है ये, भक्ति सुमन का अभिनंदन ।
मन-वच-तन से आत्म समर्पण, मोह क्षोभ का शमन करूँ
परम पूज्य आचार्य शिरोमणि, विराग सिन्धु को नमन करूँ ।।
ॐ हूँ परम पूज्य बुंदेलखंड के प्रथमाचार्य, युग प्रमुख श्रमणाचार्य, गणाचार्य श्री 108 विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवाणी पूजन

स्थापना

जिन मुख रूपी गिरि से प्रगटी मात शारदा देवी
द्वादशांग चौदह पूर्वों की, महानदी सुख देती
श्रुत अवतार हृदय में होवे, श्रुत देवी को ध्यायें
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, माता तुम्हें बुलाएँ ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुम ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुम ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

भव-भव भटके मृग की भाँति, तपन मिली है भारी
ज्ञानामृत जब छींटे पाये, तृप्त हुए दुखियारी
लौकिक सुख विष बेल बराबर, हमको नहीं लुभाये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, जल की धार चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुत की विनय करे जो जितनी, श्रुत समृद्धि पाता
चन्दन जैसा निज और पर का, जीवन है महकाता
ग्राम, नगर या कोई थल हो, यश कीर्ति वो पाये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, चंदन आज चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़ता का अभिशाप हटे तो, अक्षय ज्ञान वरण हो
मात भारती की भक्ति से, सम्यक् मार्ग गमन हो
उज्ज्वल शालि तंदुल लेकर, अक्षत भाव सजाये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, अक्षत आज चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय अक्षयप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

मात शारदा के वचनों में, पुष्पों सी कोमलता
वशीकरण है जिन वचनों में, निस्पृहता निश्छलता
भाँति-भाँति के पुष्प मनोहर, चुन-चुन कर ले आये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, सुमन अखंड चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मीठे सुस्वादु अशनों से, क्षुधा मिटानी चाही
रसना से नीचे उतरे तो, राख हो गये सब ही
ज्ञानाशन स्वभावी आत्मा, ज्ञान ही क्षुधा मिटाये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, अब नैवेद्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लख चौरासी काल कोठरी, भटक-भटक कर हारे
ज्ञानदीप अब कर में लेकर, दूर हुए अँधियारे
उजियारे में जान बूझकर, गड्ढे में क्यों जायें
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, दीपक आज चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस्वती माँ नाम मंत्र से, कर्म भस्म हो जाते
शास्त्र भक्ति करने वाले ही, सन्मार्गी बन पाते
पूजा के इस महायज्ञ में, श्रद्धा विनय बढ़ायें
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, धूप दशांग चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

विद्या का फल विनय कहा है, विनय मोक्ष ले जाता
वाग्वादिनी यह सब देती, हरती दुःख असाता
लौकिक तुच्छ कुफल न माँगें, मोक्ष महाफल भाये
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, फल बहुमिष्ट चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋद्धि सिद्धियों से अभिनन्दित, ज्ञानमूर्ति जिनवाणी
अक्षर-अक्षर अक्षय विद्या, सर्व सुखों की खानी
प्रातः सायं करें स्मरण, निर्मल भाव बनायें
विराग हृदय से विद्यार्थी जन, मिलकर अर्घ चढ़ायें ।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंध कल्पद्रुमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विश्व हो सुखी समग्र, शांतिधार फल मिले ।
मात के प्रसाद से, सुराष्ट्र फूले-फले ।

शांतये शांतिधारा

पुष्प अंजलि भरें, सरल-सहज सुगंध हो ।
पूजतें मात को, भवाब्धि पार अंत हो ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

(कायोत्सर्ग)

अथ प्रत्येक अर्घ्य

अंग प्रविष्ट नमूँ सदा, अंग बाह्य त्रयकाल ।
जिनवाणी जिनदेव को, नमूँ-नमूँ नत भाल ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रथमदले पुष्पांजलि क्षिपेत्

(1) आचारांग

मुनियों का आचार बताये, आचारांग कहाता है ।
पद सहस्र अष्टादश इसके, अर्घ चढ़ा नत माथा है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत आचारांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(2) सूत्रकृतांग

स्व पर समय और स्त्री लक्षण, सूत्रकृतांग बताता है ।
पद सहस्र षट त्रिंशत इसके, अर्घ चढ़ा नत माथा है ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत सूत्रकृतांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(3) स्थानांग

जीव अरु पुद्गल एक, दो आदिक, स्थानांग गिनाता है ।
पद सहस्र द्वि चत्वारिंशत्, अर्घ चढ़ा नत माथा है ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत स्थानांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(4) समवायांग

द्रव्य, क्षेत्र और काल, भाव सम, समवायांग दिखाता है ।
एक लाख चौंसठ हजार पद, अर्घ चढ़ा नत माथा है ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत समवायांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(5) व्याख्या प्रज्ञप्ति

जीव अस्ति या नास्ति आदि जो, साठ हजार प्रश्न समाधान ।
पद दो लाख अट्ठाईस जिसमें, व्याख्या प्रज्ञप्ति है नाम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत प्रज्ञप्ति अंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(6) ज्ञातृ धर्मकथांग

तीर्थंकर आदिक पुरुषों की, धर्म कथा है धर्म कथांग ।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, अर्घ्य चढ़ाकर करें प्रणाम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत धर्मकथांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(7) उपासकाध्ययनांग

श्रावक धर्म बताने वाला, उपासकाध्ययनांग है ।
ग्यारस लख सत्तर हजार पद, नित्य करें हम ध्यान है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत उपासकाध्ययनांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) अंतःकृत दशांग

प्रति तीर्थेश काल में दस-दस, उपसर्ग केवली होते हैं ।
तेईस लाख अट्ठाईस सहस पद, अंतः कृत दशांग कहें ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंतःकृत दशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(9) अनुत्तरौपपादिक दशांग

गये अनुत्तर उपसर्ग विजयी दस, प्रति तीर्थंकर समय शुभांग ।
बावन लाख सहस्र चवालीस, पद अनुत्तरौपपादिक दशांग ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अनुत्तरौपपादिक दशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(10) प्रश्न व्याकरण अंग

आक्षेपणी आदिक कथायें, नष्ट मुष्ट चिंतादिक प्रश्न ।
पद तिरानवे लाख सोलह, हजार प्रश्न व्याकरण सुपद ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत प्रश्न व्याकरणांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(11) विपाक सूत्र

पुण्य पाप के फल वर्णित हैं, सूत्र विपाक अंग ध्यायें ।
एक कोटि चौरासी लाख पद, बार-बार हम सिर नायें ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत विपाक सूत्रांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(12) दृष्टिवाद

तीन सौ त्रेसठ मत का वर्णन, खंडन दृष्टिवाद करे ।
इक सौ आठ करोड़ लख अड़सठ छप्पन पंच सुपद धरें ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत दृष्टिवादांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादश सुश्रुत अंग ये, मस्तक विनय चढ़ाय ।
शांतिधारा हम करें, विश्वशांति सुखदाय ।।
।। शांतये शांतिधारा ।।
अंजलि सुरभित हो गयी, जीवन सुरभित होय ।
पुष्पांजलि अर्पण करें, निज पर आपद खोय ।।
(दिव्य पुष्पांजलिः क्षिपेत्)

अथ द्वितीय दले पुष्पांजलिः

परिकर्म के 5 भेदों के 5 अर्घ्य

दृष्टिवाद के भेद हैं, पाँच कहे जिनदेव ।
क्रम-क्रम से अर्चा करें, श्रुत की करें सुसेव ।।
प्रथम कहा परिकर्म सुसुन्दर, पाँच भेद इसके भी अन्दर ।
छत्तीस लाख व पंच सहस्त्रं, चंद्र प्रज्ञप्ति कहे जिनेशं ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत चन्द्रप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूर्य प्रज्ञप्ति जानिये, सूर्य संबंधी बात ।
मण्डल आयु, ऋद्धि वा, अयन दिवस अरु रात ।।
पाँच लाख अरु तीन सहस्त्रं, पद जजते हो सौख्य समीपं ।
श्रुतदेवी को नित्य नमें हम, जय-जय जिनवर नित्य कहें हम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत सूर्य प्रज्ञप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस ही जम्बूद्वीप में, जिसमें मेरु आदि ।
सब रचना वर्णन करे, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति ।।
तीन लाख पच्चीस सहस्त्रं, पद जजते हो कर्म अशेषं ।
श्रुत देवी को नित्य नमें हम, जय-जय जिनवर नित्य कहें हम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वीप सिंधु असंख्य हैं, मध्यलोक के मांहि ।
किसमें क्या है जानिये, द्वीप सिंधु प्रज्ञप्ति ।।

बावन लाख छत्तीस सहस्रं, पद जजते आनंद विशेषं ।
श्रुत देवी को नित्य नमें हम, जय-जय जिनवर नित्य कहें हम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत द्वीपसागर प्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जीवाजीव भव्य अभव्य, सिद्ध आदि विस्तार ।
बहुभेद जुत वस्तु कहे, व्याख्या प्रज्ञप्ति सार ।।
चौरासी लख सहस्र छत्तीसं, पद जजते हो पद लोकेशं ।
श्रुत देवी को नित्य नमें हम, जय-जय जिनवर नित्य कहें हम ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत व्याख्या प्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
।। शांतये शांतिधारा ।।
(दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

अथ तृतीय दले पुष्पांजलिः

सूत्र

दृष्टिवाद का भेद दूसरा, सूत्र जिसे है कहा गया ।
गणित, क्रिया, अक्रियावाद वा, जी अबंधक लिया गया ।।
पद अट्ठासी लक्ष जिनेश्वर, दिव्य ध्वनि में कहते हैं ।
यद्यपि ना उपलब्ध हमें पर, श्रुत पर श्रद्धा करते हैं ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत दृष्टिवाद भेद सूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
।। शांतये शांतिधारा ।। दिव्य पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।

अथ चतुर्थदले पुष्पांजलिः

प्रथमानुयोगः

त्रेसठ शलाका पुरुषों का, वर्णन कर प्रमुखता से ।
मुनि मोक्षगामी खगचर आदि, कह रहा है ऋजुता से ।।
प्रथमानुयोग कहें तीर्थंकर, पंच सहस इसके पद है ।
यह बोधि और समाधि दायक त्रिजग मांहि वंद्य है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत दृष्टिवाद भेद प्रथमानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। शांतये शांतिधारा ।। दिव्य पुष्पांजलिः ।।

अथ पंचमदले पुष्पांजलिः

पूर्वगतः भेद

है भेद चौथा पूर्वगत, चौदस प्रभेद लिये हुए ।
उत्पाद पूरब है प्रथम, उत्पाद व्यय स्थित कहे ।।
सब द्रव्य की पर्याय वर्णित, कह रहे जिनदेव जी ।
पद एक कोटि वस्तु दश, प्राभृत शतक इस पूर्व जी ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत उत्पाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय

सात सौ नय दुर्नयों, द्रव्यों पदार्थों मानिये ।
वस्तु चौदह दो शतक, अस्सी ये प्राभृत जानिये ।।
अंश थोड़ा आज भी है, सूत्र षट्खंडागम यहाँ ।
छियानवे लख सुपद इसके, नमन करते हैं सदा ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अग्रायणीय पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानुवाद

आत्मवीर्य परवीर्य बताया, छद्मस्थों का करे कथन ।
तप वीर्यादिक भी कहता है, मुनिजन करते सतत मनन ।।
आठ वस्तु प्राभृत शत षष्टि, यह वीर्यानुवाद भाये ।
सत्तर लाख सुपद इसके हैं, नित प्रति अर्घ चढ़ायें ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत वीर्यानुप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व

नय के अस्तिकाय के सारे, अस्ति नास्ति के भेद कहें ।
अस्ति नास्ति यह पूर्व कहें जिन, भक्ति इसमें सतत रहे ।।

वस्तु अष्टादश त्रय शत षष्टि, प्राभृत इसमें हैं पाये ।
लख षष्टि पद सहित पूर्व ये, श्रद्धा से हम सिर नायें ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञान प्रवाद

पंचम ज्ञान प्रवाद पूर्व है, आठ ज्ञान वर्णन करता ।
इन्द्रिय आदि भेद बताता, निर्मल अंतरमन करता ।।
द्वादश वस्तु दो शत चालीस, प्राभृत कहता जिन शासन ।
एक कम कोटि पदों का धारी, अर्घ चढ़ाकर करें नमन ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत ज्ञान प्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सत्य प्रवाद

वचन गुप्ति द्वादश भाषायें, दस प्रकार के सत्य लखा ।
वक्ता के प्रकार आदिक का, वर्णन सत्य प्रवाद कहा ।।
एक कोटि षट् पद बतलाये, कोटि–कोटि वंदन करते ।
बारह वस्तु दो शत चालीस, प्राभृत जिन भगवन् कहते ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत सत्यप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आत्म प्रवाद

आत्म द्रव्य को विविध तरह से, आत्म प्रवाद बताता है ।
अस्ति नास्ति आदिक भंगों से, षट् कायिक समझाता है ।।
वस्तु सोलह त्रय शत विंशति, प्राभृत करते सेव हैं ।
छब्बीस कोटि पद से शोभित, कहते जिनवर देव हैं ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत आत्मप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म प्रवाद

कर्मों की बंधादिक दस जो, स्थितियों का करे कथन ।
तप ईर्यापद अधः कर्म का, जिसमें सूक्ष्म भरा अध्ययन ।।

बीस वस्तु प्राभृत चतुः शत हैं, कर्म प्रवाद कहें जिनवर ।
एक कोटि अरु लख अस्सी पद, सुख पाएँ हम अर्चाकर।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत कर्मप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व

पाप निरोधी, व्रत जप शोधी, प्रतिक्रम आराधना ।
त्याग विवेचक पूर्व रहा यह, करें सतत हम साधना ।।
तीस वस्तु छह सौ प्राभृत हैं, प्रत्याख्यान पूर्व है नाम ।
लख चौरासी पद युत वंदे, मन वच तन से करो प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यानुप्रवाद

छोटी सात शतक विद्यायें, पाँच शतक विद्यायें महा ।
समुद्घात श्रेणी निमित्त व, क्षेत्र ज्ञान जिसमें बसता ।।
पंद्रह वस्तु त्रय शत प्राभृत, यह विद्यानुवाद पावन ।
एक कोटि दस लाख पदों का, मन से करते हैं सुमरन ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत विद्यानुप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याण प्रवाद

तीर्थंकर, चक्री, प्रतिचक्री, बल, वासु, प्रति वासुदेव ।
गर्भ कल्याणादिक वर्णित है, दस वस्तु दो शत प्राभृत ।।
ज्योतिष देव गमन आदि का, शकुन आदि का विवरण है।
कोटि छब्बीस कल्याणवाद पद, अर्घ चढ़ाकर वंदन है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखिकमल विनिर्गत कल्याणप्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणावाय प्रवाद

काय चिकित्सा आयुर्वेदिक, भूति कर्म का कथन करें ।
प्रक्रम प्राणापान जांगुलिक, वर्णन जो अष्टांग करें ।।

दस वस्तु दो सौ प्राभृत युत, प्राणावाय पूर्व कहते ।
कोटि त्रयोदश पद से शोभित, अर्घ चढ़ा वंदन करते ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत प्राणावाय प्रवाद पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्रिया विशाल पूर्व

भरत शास्त्र संगीत शास्त्र है, कला बहत्तर और चौंसठ ।
देव वंदना नित्य नैमित्तिक, समदर्शन की क्रिया महत् ।।
दस वस्तु दो सौ प्राभृत युत, क्रिया विशाल पूर्व होता ।
नव करोड़ पद ह्रदय धरे जो, उसका ह्रदय शुद्ध होता ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत क्रियाविशाल पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक बिन्दुसार

तीन लोक सम्पूर्ण प्रकटता, मोक्ष सुखों तक वर्णन है ।
पूर्व त्रैलोक्य बिंदु कहलाता, अहा नाथ क्या चित्रण है ।।
दश वस्तु दो सौ प्राभृत युत, त्रिलोक बिंदु सार है ।
साढ़े बारह कोटि पदों की, अर्चना शत बार है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत लोकबिन्दुसार पूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ षष्ठम दले पुष्पांजलिः

जलगता

पंचम भेद चूलिका जानो, अब दृष्टिवादांग का ।
उसके भी प्रभेद पाँच है, वंदन है इस ज्ञान का ।।
प्रथम जलगता जल स्तंभन, अग्नि भक्षणादिक वर्णे ।
दो कोटि नौ लाख नवासी, सहस द्विशत पद हम अर्चें ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत जलगता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्थलगता

पृथ्वी, पर्वत में प्रवेश हो, मंत्र तंत्र तप करे कथन ।
बहुविधि वर्णन करे स्थलगता, क्षेत्रादिक में शीघ्र गमन ।।
ऐसी स्थलगता चूलिका, पद जलगता समान है ।
अर्घ्य चढ़ाकर स्तुति करते, बारंबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत स्थलगता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायागता

इन्द्रजाल कर्तव्य संबंधी, इसमें क्रिया कलाप हैं ।
मंत्र-तंत्र व तपश्चरण से, विक्रिया का भी पाठ है ।।
ऐसी मायागता चूलिका, पद जलगता समान हैं ।
अर्घ्य चढ़ाकर स्तुति करते, बारंबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत मायागता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाशगता

नभ में गमनादिक करने के, मंत्र तंत्र तप चर्चित हैं ।
यंत्र-तंत्र ऐसे बहु साधन, भली-भाँति से वर्णित हैं ।।
यह नभगता चूलिका जानो, पद जलगता समान हैं ।
अर्घ्य चढ़ाकर स्तुति करते, बारंबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत आकाशगता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपगता

सिंह, गज, घोड़ा, मनुष्य आदि, बहु रूप धराने विधि कही ।
किंतु निस्पृही संत चिंतते, आत्म स्वरूपी अतुल निधि ।।
ऐसी रूपगता चूलिका, पद जलगता समान है। ।
अर्घ्य चढ़ाकर स्तुति करते, बारंबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत रूपगता चूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। शांतये शांतिधारा ।। दिव्य पुष्पांजलिः ।।

अथ सप्तम दले पुष्पांजलिः

अंगबाह्य के चौदह प्रकीर्णकों के अर्घ्य

अंग बाह्य के चौदह जानो, नाम प्रकीर्णक से पहचानो ।
सामायिक आदि क्रम-क्रम से, अर्घ्य चढ़ायें मन-वच-तन से ।।
स्वरूप सामायिक का कहता, जिससे मोक्ष नियत है मिलता ।
सामायिक है प्रथम प्रकीर्णक, नमन करें मन वच तन इक कर ।।1।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य सामायिक प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों तीर्थंकर प्रभु की, श्रुति वंदना फल दिखलाता ।
जिन प्रतिमा आदिक का वर्णन, चतुर्विंशतिस्तव कहलाता ।।2।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य चतुर्विंशति स्तव प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक-एक जिन या जिनमंदिर, वंदन ताप निवारक है ।
इनका वर्णन करने वाला, वंदना प्रकीर्णक नामक है ।।3।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य वंदना प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिवस, रात्रि, पाक्षिक, आदिक जो सप्तभेद के प्रतिक्रमण ।
इनका वर्णन करने वाला, यह प्रकीर्णक प्रतिक्रमण ।।4।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य प्रतिक्रमण प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन आदि विनय के लक्षण, भेद बताने वाला है ।
वैनयिक यह श्रुत प्रकीर्णक, खोले मुक्ति ताला है ।।5।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य वैनयिक प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरतिचार मुनि आचारों का, सार समाया है जिसमें ।
दशवैकालिक यह प्रकीर्णक, धरो सदा अपने मन में ।।6।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य दशवैकालिक प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवदेवों की वंदना, त्रय परिक्रमा, चतुः शिरोनति ।
द्वादश आवर्तों आदिक की, कृति कर्म में रही सुविधि ।।7।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य कृतिकर्म प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाईस परीषह जय का वर्णन, चउ प्रकार उपसर्ग विजय ।
उत्तराध्ययन प्रकीर्णक करता, प्राणी के पापों का क्षय ।।8।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य उत्तराध्ययन प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

युक्ताचरण क्रिया बतलाये, प्रायश्चित की विधि कहे ।
नवम कल्प व्यवहार यही है, हम सब मिलकर नमन करें ।।9।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य कल्प व्यवहार प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सम्यक् चारित्र व्याख्या जिसमें, कल्पाकल्प कहें जिनवर ।
युक्तायुक्त द्रव्य आदि से, व्याख्या करता है सुन्दर ।।10।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य कल्पाकल्प प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाकल्प प्रकीर्णक कहता, मुनि के योग्य शक्ति संहनन ।
द्रव्यादि का वर्णन जिसमें, अयुक्त त्याग का करे कथन ।।11।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य महाकल्प्य प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवनत्रिक उत्पत्ति कारण, उनके पूजा दानादिक ।
अकाम निर्जरा, संयम विधि भी, कहता है यह पुंडरीक ।।12।।

ॐ ह्रीं जिनन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य पुण्डरीक प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महा ऋद्धिधारी प्रतीन्द्र व इंद्र में उत्पत्ति हेतु ।
वर्णन करता तेरहवाँ यह प्रकीर्णक जो भव का सेतु ।।13।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य महापुण्डरीक, प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रमाद से बहुदोषोत्पत्ति, उनका त्याग बताता है ।
अंगबाह्य का अंग चतुर्दश, निषिद्ध यह कहलाता है ।।14।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत अंगबाह्यस्य निषिद्धका प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ अष्टम दले पुष्पांजलिः

तीर्थंकरादिक महाजनों की, जिसमें दिव्य कथाये हैं ।
ऐसे प्रथमानुयोग श्रुत को, मन-वच-तन से ध्याये हैं ।।
आदि पुराण आदि शास्त्रों को, बोधि समाधि निधान कहा ।
जिनमुख से निर्गत है यह भी, ज्ञान बढ़ायें अर्घ चढ़ा ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत प्रथमानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन लोक संस्थान आदि को, कर्म प्रकृति दर्शाता ।
सूक्ष्म करे व्याख्यान जो ऐसे, अन्य जगह न मिल पाता ।।
षट्खंडागम आदिक ऐसे, शास्त्रों को हम करें नमन ।
जिनमुख से निर्गत है यह भी, शुद्ध हृदय से करें मनन ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत करणानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनि गृहस्थ के आचारों को, विस्तृत जो समझाता है ।
यह अनुयोग महाउपकारी, चरणानुयोग भाता है ।
रत्नकरण्डक आदि अनेकों, शास्त्र विलोके जाते हैं,
जिनमुख से निर्गत है यह भी, हम सब अर्घ चढ़ाते हैं ।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत चरणानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्त तत्व नव पदार्थ आदिक, वर्णन जिसमें आया है ।
आगम दीपक आचार्यों ने, यह अनुयोग बताया है ।।

तत्वसार आदिक ग्रंथों से, द्रव्यानुयोग शोभित है ।
जिन मुख से निर्गत है यह भी, सादर अर्घ समर्पित है ।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेव मुखकमल विनिर्गत द्रव्यानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ नवम दले पुष्पांजलिः
(अंग पूर्व धारी मुनियों को अर्घ्य)

त्रय अनुबद्ध केवली नामी, गौतम सुधर्म जम्बूस्वामी ।
त्रय भक्ति से अर्घ चढ़ायें, प्रज्ञा शक्ति नित्य बढ़ायें ।।
ॐ ह्रीं गौतमादि त्रय अनुबद्धकेवलिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विष्णुनंदि, अपराजित वंदे, गोवर्धन भद्रबाहु प्रथम ।
श्रुत केवली पंच हुये ये, अर्घ चढ़ाकर करें नमन ।।
ॐ ह्रीं विष्णुनंदि आदि पंच श्रुतकेवलिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विशाखा प्रोष्ठिल क्षत्रिय श्री जय, नागसेन सिद्धार्थजी ।
श्री धृति विजय बुद्धि सेन जी, गंगदेव धर्मसेन जी ।।
ग्यारह अंग पूर्व दस धारी, एकादश आचार्य हुए ।
अर्घ चढ़ाकर नमन करे जो, पूरण उनके कार्य हुए ।।
ॐ ह्रीं विशाखादि एकादशांग, दशपूर्व धारी एकादश सूरिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नक्षत्र जयपाल सूरिश्वर, पाण्डु श्री ध्रुवसेन महान ।
कंसाचार्य सुभद्र सूरिजी, श्रुत पारंगत थे विद्धान ।।
अर्घ चढ़ाकर करें प्रार्थना, हम श्रुतज्ञता को पायें ।
ग्यारह अंग धारते ऐसे, सूरिश्वर को हम ध्यायें ।।
ॐ ह्रीं नक्षत्रादि एकादशांग धारी सूरिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशांग ज्ञाता यशोभद्र थे, नौ अंगों के भद्राचार्य ।
लोहाचार्य अष्ट अंगों के, अर्घ चढ़ायें मन में धार ।।
ॐ ह्रीं यशोभद्र, भद्राचार्य, लोहाचार्य सूरिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनयदत्त व दत्त सूरिजी, शिवदत्त अर्हद् दत्ताचार्य ।
एक अंग के ज्ञाता मुनिवर, अर्घ्य चढ़ायें बारंबार ।।
ॐ ह्रीं एकादशांगधारी विनय दत्तादि मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हद्बली माघनंदीजी, और हुए धरसेनाचार्य ।
पुष्पदंत श्री भूतबली जी, शीश नवायें बारम्बार ।।
ॐ ह्रीं अर्हद्बली आदि अंगांशधारी सूरभ्यि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
।। शांतये शांतिधारा ।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा

विनय भक्ति जयमालिका, देती सम्यग्ज्ञान ।
सम्यक् केवल ज्ञान दे, केवल दे निर्वाण ।।

भरत ऐरावत या विदेह के, त्रिकाल वंद्य तीर्थेश्वर जी,
छह-छह घड़ी प्रतिदिन जिनकी, तीन समय थी ध्वनि खिरी ।
संप्रति युग में भरत क्षेत्र के, पहले ऋषभनाथ स्वामी,
महावीर पर्यंत मिली है, दिव्य देशना कल्याणी ।
श्रुत प्रवाह वह गणधरादि ने, आचार्यों ने बना रखा,
विस्मृति, स्वार्थ, हीन बुद्धि से, धीरे-धीरे क्षरण हुआ ।
ज्ञान अनंत निःशेष पूर्ण तो, केवलज्ञानी मात्र धरें,
पर उसका अनंत भाग ही, दिव्य देशना में खिरे ।
गणधर भी जो अंश झेलते, अंश का अंश रचाते हैं,
अहो ज्ञान की महिमा फिर भी, धन्य जीव हो जाते हैं ।
वीर मोक्ष गमनोपरान्त, गौतम ने सद्उपदेश दिया,
अनुबद्ध केवली सुधर्म-जंबू, ने भी यही विशेष किया ।
क्रमशः इनका काल रहा जो, बारह-बारह, अड़तीस वर्ष,
फिर अन्य केवली श्रीधर आदि, करते रहे स्व-पर उत्कर्ष ।

विनयदत्त व दत्त सूरिजी, शिवदत्त अर्हद् दत्ताचार्य ।
एक अंग के ज्ञाता मुनिवर, अर्घ्य चढ़ायें बारंबार ।।
ॐ ह्रीं एकादशांगधारी विनय दत्तादि मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हद्बली माघनंदीजी, और हुए धरसेनाचार्य ।
पुष्पदंत श्री भूतबली जी, शीश नवायें बारम्बार ।।
ॐ ह्रीं अर्हद्बली आदि अंगांशधारी सूरभ्यि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
।। शांतये शांतिधारा ।। पुष्पांजलिः क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा

विनय भक्ति जयमालिका, देती सम्यग्ज्ञान ।
सम्यक् केवल ज्ञान दे, केवल दे निर्वाण ।।

भरत ऐरावत या विदेह के, त्रिकाल वंद्य तीर्थेश्वर जी,
छह-छह घड़ी प्रतिदिन जिनकी, तीन समय थी ध्वनि खिरी ।
संप्रति युग में भरत क्षेत्र के, पहले ऋषभनाथ स्वामी,
महावीर पर्यंत मिली है, दिव्य देशना कल्याणी ।
श्रुत प्रवाह वह गणधरादि ने, आचार्यों ने बना रखा,
विस्मृति, स्वार्थ, हीन बुद्धि से, धीरे-धीरे क्षरण हुआ ।
ज्ञान अनंत निःशेष पूर्ण तो, केवलज्ञानी मात्र धरें,
पर उसका अनंत भाग ही, दिव्य देशना में खिरे ।
गणधर भी जो अंश झेलते, अंश का अंश रचाते हैं,
अहो ज्ञान की महिमा फिर भी, धन्य जीव हो जाते हैं ।
वीर मोक्ष गमनोपरान्त, गौतम ने सद्उपदेश दिया,
अनुबद्ध केवली सुधर्म-जंबू, ने भी यही विशेष किया ।
क्रमशः इनका काल रहा जो, बारह-बारह, अड़तीस वर्ष,
फिर अन्य केवली श्रीधर आदि, करते रहे स्व-पर उत्कर्ष ।

केवली इस परंपरा के, बादपंच शत वर्ष भी,
विष्णु से श्री भद्रबाहु तक, पाँच रहे श्रुत केवली ।
एकादशांग, दश पूर्व धरें जो, एकादश आचार्य हुए,
श्रुत प्रवाह यूँ बना रहा, एक सौ तेरासी वर्ष हुए ।
आगे ग्यारह अंग विज्ञानी, नक्षत्रादि हुए मुनिवर,
दो सौ तीस वर्ष यूँ निकले, श्रुत सेवा में थे तत्पर ।
श्रुत परंपरा चलते-चलते, आचारांग रहा बस ज्ञान,
काल इकशत अष्टादश था, यशोभद्र आदिक थे नाम ।
अंग पूर्व का ज्ञान अस्त हो, अब अंगांशों का ही ज्ञान,
अर्हद्बलि से भूतबली तक, आते हैं जिनके शुभ नाम ।
धरसेन थे अंगांश ज्ञाता, प्रेरणा जिनकी भली,
षट्खंडागम श्रुतस्कंध रचा, श्री पुष्पदंत श्री भूतबली ।
श्री कुंदकुंदाचार्य आदिक, आगे भी विद्वान हुए,
जिन्होंने हमें, बारसाणुवेक्खा, रयणसार से शास्त्र दिये ।
दो हजार जो वर्ष पुरातन, कुंदकुंद के ग्रंथ महान,
प्रथम लिखी संस्कृत टीकाएँ, मम गुरु 'विराग सूरि' प्रधान ।
'सर्वोदया', 'रत्नत्रयवर्धिनी' बार-बार हम नमते हैं,
विद्वज्जन आश्चर्य करें लख, हम गुरुवर से पढ़ते हैं ।
हे माता! वरदान हमें दो श्रुतसेवा गुरुभक्ति का,
सुगति सुमति और समाधि, भवसिंधु से मुक्ति का ।
चंद्र सूर्य इन टीकाओं की, यश गाथा में तत्पर हो,
भव्यजनों को ज्ञान मिले और, श्रुत की चर्चा घर-घर हो ।।

'श्रुतज्ञान वर्धक' यह विधान है,
रचा गुरु आज्ञा अनुसार
भूल चूक जो संभव इसमें
गुरु विरागी करें सुधार ।

इति जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'वियुक्त' कर सब दोष से, दो 'विराग' सम ज्ञान ।
शांतिधारा हम करें, शांति दो भगवान ।।
।। शांतये शांतिधारा ।।

पुष्प जगत में हैं बहु, सुरभित होवे बाग ।
जिनशासन सुरभित करें, मेरे गुरु 'विराग'।।
इत्याशीर्वाद :(पुरूपाञ्जलिं क्षिपामि)

बुद्धिवर्द्धक ऋद्धि मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहन्ताणं, णमो जिणाणं, ह्रां, ह्रीं, ह्रूं, ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणु सारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्ण सोदारणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजु मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अष्टांग महानिमित्त कुशलाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि–विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग–तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर–परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि–पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि–पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण–बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर–सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि–सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढ माणाणां झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व सिद्धाय दणाणं वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।
48. ॐ नमो भगवते महदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि रिसीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अर्हत्मुखोद्भव श्रुताय नमः मम ज्ञानवृद्धिं कुरू कुरू स्वाहा ।

सर्वोदया टीका पूजन

स्थापना

श्री कुंदकुंदाचार्य की, वारसाणुपेक्खा पर टीका,
सर्वोदयी जिनधर्म का, वरदान है सर्वोदया ।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

आत्मा न जल से आर्द्र होती, कह रही सर्वोदया,
द्रव्यानुयोग सुनीर को, इसने समाहित कर लिया ।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप संयममय चंदन सुरभित, जिन तीर्थेशों ने दिया,
चरणानुयोग आख्यान को, कहती सदा सर्वोदया ।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह बोधि समाधि निधान रूप, दे निरक्षयी उपलब्धियाँ,
प्रथमानुयोग अमृतमयी, इसने समाहित कर लिया ।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोक में संस्थान गतियाँ, युग परिवर्तन जो रहा,
करणानुयोग आगम सुमन, इसने समाहित कर लिया ।।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर क्षुधा है आगम की, आगम ने चेतन तृप्त किया,
उद्धरण मिले हर ग्रंथ के, नय प्रमाण का जलता दिया।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्ग्रंथों ने जो ग्रंथ रचे, वो मन की ग्रंथि खोल रहे,
आगम प्रमाण दीपों को ले, हम सम्यक् मार्ग टटोल रहे।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानाचारादि अष्ट अंग, निज अष्ट कर्म का नाश करें,
संशय से रहित निःशंकित हो, जिन आगम पर विश्वास करें।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्या से बढ़कर बुद्धि है, जो बोध बोधि को दिला रही,
फल पूजा इस विध पूर्ण बने, यह भव्य जनों को सिखा रही।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनग्रुह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब तक नभ में चाँद सितारे, अमर रहे सर्वोदया,
श्री कुंद-कुंद की वारसाणुपेक्खा, जिस पर यह पहली टीका।
श्री गणाचार्य गुरु विराग सिंधु, प्रज्ञा शिरोमणि गुरुवर,
हम पर अनुग्रह है किया, यह महान श्रुत आगम रचकर ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्रुत की आराधन विनय, देती मुक्ति द्वार।
गुण महिमा सर्वोदया, कहूँ हृदय में धार ।।

इस घोर पंचम काल में अब, केवलज्ञान अभाव है,
श्रुतज्ञान श्रुतज्ञानी गुरु की, मिल रही पर छाँव है।
यह ज्ञान भी घटता हुआ, क्षायोपशमिक प्रमाण है,
है अंजुलि में जल वही, सागर में जो विद्यमान है।
यह भी नहीं खो जाए कर से, अतः सुश्रुत लेखन हुआ,
षटखंडागम यह ग्रंथ प्रथम, गुरु पुष्प-भूतबली ने रचा।
श्रुत संरक्षण की भावना, सबमें प्रबल होती गई,
रच दिये ग्रंथ निर्ग्रंथों ने, आगम प्रमाण देकर सही।
चौरासी पाहुड रचने वाले, कुंद-कुंद आचार्य हुए,
है उनकी ही बारसाणुपेक्खा, दो सहस्र वर्ष बीता समय।

मम गुरु विराग सागर महान, चतु अनुयोगों का गहन ज्ञान,
रच दी टीका संस्कृत प्रथम, बारसाणुपेक्खा पर अनुपम ।
''सर्वोदया'' उसका है नाम, करते स्वाध्याय भव्य मान,
महाराष्ट्र नगर में पूर्ण हुई, था मुम्बई चौमास वही ।
दिन पूरे एक सौ आठ लगे, ग्यारह सौ पृष्ठ दो भाग बने,
जयपुर में जयंती स्वर्ण मनी, दो सौ लगभग साधु साध्वी ।
विद्वान शताधिक उपस्थिति, श्री अशोक गहलोत मुख्यमंत्री,
निज कर से किया विमोचन था, वह दृश्य बड़ा मनभावन था ।
भक्तों में भी उत्साह बड़ा, सारा जग मानो उमड़ पड़ा,
जो श्रद्धा-भक्ति से पढ़ते, ज्ञानाचरणी बादल छटते ।
अतिशय निर्मल स्वभाव पाते, जो मन से नित्य इसे ध्याते,
श्री कुंद-कुंद कृत रयणसार, जिस पर भी गुरु ने कर विचार ।
टीका ''रत्नत्रयवर्धिनी'', संस्कृत रची निज लेखनी,
हम गुरु को शीश नवाते हैं, रत्नत्रय निधि बढ़ाते हैं ।
गुरु तत्पर हैं श्रुत भक्ति में, हम हों तत्पर गुरु भक्ति में,
गुरु मुख से श्रुत का ज्ञान मिले, नित विराग अमृत पान मिले ।।

ॐ ह्रीं श्रीमद् गणाचार्य विरागसागर विरचिता सर्वोदया टीका जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व जगत अज्ञान हर, 'सर्वोदया' प्रभात,
गुरु विराग की यशकीर्ति, विस्तृत हो दिन-रात ।
शांतये शांतिधारा ।।

शब्द चुने गुरु आपने, टीका लिखने काज,
टीका की पूजा रचूँ, भक्तिवश बिन लाज ।।
।। पुष्पांजलिः क्षिपेत ।।
(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़े ।)

समतामूर्ति गुरुवर विराग (गुरु पूजन)

स्थापना

नमन–नमन हे विराग सिन्धु, नमन–नमन कर कहता मन,
चरण शरण दो आन पधारो, मन मंदिर में धरो चरण ।
पूजा की हम थाल सजाकर, तुम्हें समर्पण करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज यतिवर अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् । ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज यतिवर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज यतिवर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

परिपुष्पांजलिं क्षिपामि ।

मैली चादर धोते–धोते, जीवन सारा बीत गया,
मन का मैल न धो पाया मैं, बाहर से नवनीत रहा ।
जल अर्पण कर आत्म स्वच्छता, हेतु निवेदन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरभित होकर सुरभि देकर, चंदन चंचल चित्त हरे,
लेकिन गुरु चरणों को छूकर, जन–जन के यह शीश चढ़े ।
चंदन–सा मन कर दो गुरुवर, गुण चंदन चित धरते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज यतिवरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

टूटे–फूटे भाव ह्रदय के, टूटी–फूटी है भाषा,
फिर भी यह अज्ञानी करता, गुरु पूजन की अभिलाषा ।

परम कृपालु मेरे गुरुवर, क्षत को अक्षत करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज यतिरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुर सुमनों को ला नहीं पाया, नंदनवन के पुष्प सही,
स्वीकारो हे नाथ हमारी, इतनी ही सामर्थ्य रही ।
भक्ति भाव के सुमन संजोकर, गुरु पद पूजन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

खाया-खाया इतना खाया, तीन लोक भी छोटा है,
फिर भी पेट नहीं भर पाया, कैसा इसका टोटा है ।
धन्य तपस्वी गुरुदेव हैं, जो एकाशन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जगमग-जगमग ज्योति भाई, नयनों का आनंद हुआ,
गुरु उपदेशों की ज्योति से, जड़ दीपक भी मंद हुआ ।
श्रमण सूर्य की किरणों से हम, जीवन रोशन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म जलाते तप से प्रतिक्षण, शीतलता बरसाते हो,
इसीलिए तो श्रमण सूर्य बस, एक तुम्हीं कहलाते हो ।
क्रोधादिक का शमन कर सकें, गुरु पद वंदन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भरे हुए प्रोटीन विटामिन, इसीलिए फल कहलाते,
भरे हुए गुणफल हैं जिनमें, वे जग में पूजे जाते ।
जीवन सफल बना दो गुरुवर, फल से अर्चन करते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हीरे मोती माल खजाना, सबको ठोकर मारी है,
श्यामानंदन विराग तुमको, पूजे दुनिया सारी है ।
आत्मा की कीमत जो समझे, अष्ट गुणों को वरते हैं,
इसी बहाने गुरुवर तुमको, जीवन अर्पण करते हैं ।

ॐ ह्रूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

जयमाला अर्पण करूँ, मैं श्यामा के लाल ।
स्वीकारो भक्ति मेरी, करो मुझे खुशहाल ।।
जब तुम जन्मे इस धरती पर, सारी सृष्टि मुस्काई ।
ग्राम पथरिया के दर्शन को, दौड़ी-दौड़ी वो आई ।।
माँ श्यामा की गोद में खेले, जैन धर्म के उजियारे ।
कपूरचंद का मान बढ़ाया, गूँज रहे हैं जयकारे ।।
एक सौ इक्यासी दीक्षाएँ, निज कर से दे डाली हैं ।
विमल सिन्धु के आशीषों से, ऐसी प्रगति पा ली है ।।
उपसर्गों पर जय पाई है, उत्कर्षों से आकर के ।
उपसर्गों को पड़ा है जाना, आखिर मुँह की खाकर के ।।

सत्य तुम्हारा विजयी बना है, तुम उपसर्ग विजेता हो ।
पार्श्वनाथ सम पंचमयुग के, तुम ही सच्चे नेता हो ।।
विश्व तुम्हारा ऋणी रहेगा, चिर युग तक यश गाएगा ।
जिसने जितना कष्ट सहा है, उतना पूजा जाएगा ।।
अश्रुधारा रुक न पाती, जब-जब चिंतन करते हैं ।
जिनने जीवन दिया उन्हें हम, जीवन अर्पण करते हैं ।।
सन्मति सिन्धु साथ तुम्हारे, तुम उनकी हो परछाई ।
कितना चाहें कह न सकेंगे, गुरु तुम्हारी अच्छाई ।।
लाखों में क्या एक जहाँ में, एक तुम्हीं अंतर्मन में ।
मुस्काते ही देखा तुमको, आते-जाते पतझड़ में ।।
मुझको भी ऐसी समता दो, राग-द्वेष पर जय पाऊँ ।
गुरु विराग सिन्धु गुण गाते, विराग में ही रम जाऊँ ।।
अक्षर अक्षय झर रहा, गुरु मुख से उपदेश ।
तुम जैसे ही संत तो, हरते जग का क्लेश ।।
पूजा करते भाव से, चाव हृदय में धार ।
विराग सिन्धु मम गुरु, नमन तुम्हें शत बार ।।

ॐ हूं परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज यतिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

आता-जाता कुछ नहीं, भक्ति करे वाचाल ।
पुष्प समर्पित हैं किये, श्रद्धा की भर थाल ।।
(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

धन-वैभव की चाह से, वियुक्त होकर आज ।
शांति चाहते हैं सभी, शांति दो गुरुराज ।।
(शांतये शांतिधारा)

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी ।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी ।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा ।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ ।
पंचमेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ ।।
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार गिरि पूजूँ सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा ।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के ।।
जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः । दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः । उत्तम-क्षमादि दशलक्षण धर्मभ्योनमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः । जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर नगरी के विषै, ऊर्ध्व लोक-मध्यलोक-पाताललोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः । विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः । पाँच भरत, पाँच ऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः । नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, राजगृही, तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो

नमः । जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चन्देरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपा वन्तं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे .....नाम्नि नगरे .... मासानामुत्तमे .... शुभ पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ...... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकलकर्मक्षयार्थ अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिए।)

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी ।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ।।
पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी ।
इन्द्रनरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमोशांतिहित शांति विधायक ।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा ।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ।।
शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिरनाई ।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ैं जिन्हें पुनि चार संघको ।।

पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके ।।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप ।।

(निम्न श्लोक को पढ़कर जल छोड़ना चाहिए ।)

संपूजकों को, प्रतिपालकों को, यतीनकों को, यतिनायकों को ।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे ।।
होवै सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्म-धारी नरेशा ।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अंदेशा ।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृषको, जो सदा सौख्यकारी ।।

(निम्न श्लोक पढ़कर चन्दन छोड़ना चाहिए ।)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ।।
शास्त्रों का हो पठन सुखदा लाभ सत्संगति का ।
सद्वृतों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का ।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ ।
तौ लों सेऊ चरण 'जिन' के मोक्ष जौ लों न पाऊँ ।।
तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने ।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से ।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी ।
मरण समाधि सु दुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

विसर्जन

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ।।
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान ।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ।।
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ।।
आये जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमान ।
ते अब जावहू कृपाकर, अपने-अपने थान ।।
श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय ।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय ।।
(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपें।)

जिन स्तुति

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करों मन लाय ।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि ।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय ।
बार-बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भवसागर तरूँ ।।
नाम लेत सब दुख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय ।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव ।।
जिन पूजा तैं सब सुख होय, जिन पूजा सम अवर न कोय ।
जिन पूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रम तैं पावै निर्वाण ।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज ।
पूजा करके नवाऊँ शीश, मम अपराध क्षमहु जगदीश ।।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान ।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भगवान ।।
पूजन करते देव का, आदि मध्य अवसान ।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान ।।
जैसी महिमा तुम विषैं, और धरैं नहिं कोय ।
जो सूरज में जोति है नहिं तारागण होय ।।
नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिनमाहि पलाय ।
ज्यों दिनकर प्रकाश तैं, अन्धकार विनशाय ।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अज्ञान ।
पूजा विधि जानू नहीं, शरण राखि भगवान ।।

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपें ।)

ॐ ह्रीं अस्मिन् श्रुतज्ञानवर्धक विधान मण्डलपूजा विधानकर्मणि आहूयमाना देवगणाः स्वस्थानं गच्छन्तु अपराधक्षमापणं भवतु ।

जीवन की महत्वपूर्ण झांकियाँ परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज

पूर्व नाम : अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म : 2 मई, 1963, गुरुवार (वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020, पथरिया)
माता–पिता : श्रीमती श्यामादेवी जैन
(समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी)
श्री कपूरचन्दजी जैन
(समाधिस्थ पू. श्रमण मुनि श्री 108 विश्ववंद्य सागरजी)
बहिन : श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई : श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा : इण्टर, मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा : 20 फरवरी 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुद्वार, शहडोल (म.प्र.)
नामकरण : पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु : प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी
मुनि दीक्षा : 9 दिसम्बर 1983 (मगसर शु. 5 वि.सं. 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु : प.पू. निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
आचार्य पद : 8 नवम्बर 1992 (का.शु. 13 वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरी सिद्ध क्षेत्र (म.प्र.)
संयमी सृजन : आचार्य–9, मुनि–89, गणिनी आर्यिका–4, आर्यिका–71, ऐलक–5, क्षुल्लक–23, क्षुल्लिका–30, कुल–231

प्रशिष्य : 175 से अधिक
समाधि सल्लेखनाएँ– 98 तथा 19 सहयोग, अनेकों तिर्थंच
चातुर्मास : 1980 से 2019 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.), मूडबिद्री (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्‌गांव (महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), गाजियाबाद कविनगर (उ.प्र.), सम्मेद शिखरजी (झारखण्ड)– कोलकाता (प० बं०)

साहित्य सृजन : 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय 'सर्वोदया संस्कृत टीका'
2. रयणसार ग्रन्थ पर 1300 पृष्ठीय 'रत्नत्रयवर्धिनी' संस्कृत टीका एवं लिंगपाहुड़ पर 'श्रमण प्रबोधनी' शीलपाहुड पर 'श्रमणसम्बोधिनी' टीका

3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।
4. शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ पर संस्कृत में चूर्णिसूत्र
5. प्राकृत भक्तियाँ

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर 85

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 50 से अधिक

सिद्धांत वाचताएँ : धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 7 पुस्तकें। (क्रम जारी है)

गोष्ठियाँ : विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश–वकील, डॉक्टर्स, शासनिक, सर्वधर्म सम्मेलन।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति अभियान : भिण्ड (म.प्र.) बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), कारंजा (महा.), मेलचित्तामूर (तमिल.), उद्गाँव (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरी (म.प्र.) पथरिया (म.प्र.) भिण्ड (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), गाजियाबाद (उ.प्र.) सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) जिसमें 27 लाख से अधिक छात्र–छात्रायें व्यसनमुक्त शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावकसंस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौडगढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह, दिल्ली, भिण्ड।

न्यायालय प्रवचन : अजमेर, भिण्ड

पगविहार : 1,00,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर, झाँसी।

वृहत यति सम्मेलन एवं युगप्रतिक्रमण : जयपुर (राज. 2012), झाँसी (करगुवां) (उ.प्र. 2017) (200 शिष्य, प्रशिष्य, अन्य साधु भी) श्रमण–श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुनः स्थापना।

उपसर्ग विजेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

क्र.	साहित्य	मूल्य
1.	संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1–2	150
2.	संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1–2	185
3.	संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (लिंगपाहुड)	
4.	संस्कृत श्रमण सम्बोधिनी टीका (शील पाहुड)	
5.	शास्त्रसार समुच्चय ग्रंथ पर चूर्णिसूत्र	
6.	शुद्धोपयोग	40
7.	सम्यग्दर्शन	35
8.	आगम चक्खू साहू	25
9.	सल्लेखना से समाधि	30
	(शोधपूर्ण साहित्य)	
10.	संत साधना के प्रेरक प्रसंग	20
11.	परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी)	45
12.	सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म	30
13.	तीर्थकर दिव्य दर्शन	30
14.	तीर्थकर दर्शन	
15.	व्यसन विचार	100
16.	फूल नहीं, हैं काँटे	
17.	संस्कार सुरभि (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी)	18
18.	जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन	10
19.	आध्यात्मिक शंका–समाधान	30
20.	आध्यात्मिक तत्व–चर्चा	40
21.	श्रमण आहारचर्या	50
	(चिन्तन साहित्य)	
22.	चैतन्य चिन्तन भाग–1	15
23.	चैतन्य चिन्तन भाग–2	15

24.	चैतन्य चिन्तन भाग–3	15
	(बालोपयोगी साहित्य)	
25.	बाल विज्ञान भाग–1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़)	10
26.	बाल विज्ञान भाग–2 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
27.	बाल विज्ञान भाग–3	10
28.	बाल विज्ञान भाग–4	10
29.	कर्म विज्ञान भाग–1 (हिन्दी, इंग्लिश)	10
30.	कर्म विज्ञान भाग–2	10
31.	कर्म विज्ञान भाग–3	10
	कथा साहित्य	
32.	नैतिक कथा मंजूषा भाग–1	30
33.	नैतिक कथा मंजूषा भाग–2	30
	(अनुवाद साहित्य)	
34.	वारसाणुवेक्खा	
35.	परमरत्नार्चना संग्रह	20
36.	समायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती)	10
	पद्य साहित्य	
37.	प्राकृत भक्ति संग्रह	
38.	भावों के विशुद्ध क्षण	15
39.	मुक्तकाञ्जलि भाग–1	15
40.	मुक्तकाञ्जलि भाग–2	15
41.	नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा	
	(संकलित/सम्पादित साहित्य)	
42.	साधना से समाधि	20
43.	विमल नित्य पाठावलि	25
44.	आराधना	35
45.	सुभाषित संग्रह	40
46.	आप्त अर्चना	
47.	मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तासर)	65
48.	साधना	10
49.	अनुप्रेक्षा	10
50.	जिनागम दीप	251
51.	सम्मेद शिखर विधान	

52.	चारित्र शुद्धि व्रत	25
53.	करूणामूर्ति सन्त	100
54.	तपस्वी सम्राट	10
55.	यज्ञोपवीत विधि	
56.	साधना के सोपान	
57.	पदम् पुरान प्रश्नोत्तरी	100
58.	स्तोत्र भारती	51
59.	छहढ़ाला	20
60.	इष्टोपदेश	20
61.	द्रव्यसंग्रह	20
62.	तत्वार्थसूत्र	30
	(एकांकी/नाटक साहित्य)	
63.	सत्यमित्र–सत्यदृष्टि	
64.	प्रद्युम्न हरण	
	(पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य)	
65.	विरागाभिवंदन अभिवंदन I,II	
66.	निस्पृही संत भाग– 1–2	60
67.	विराग सेतु (महाकाव्य) भाग–2	
69.	संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर	65
70.	कमल से महाकमल	
71.	घटनायें ये जीवन की	80
72.	दिगम्बरत्व के चितेरे	150
73.	विराग सिंधु की उर्मियाँ	15
74.	विराग वाटिका	41
75.	भक्ति की झंकार	25
76.	विराग काव्यांजलि	
77.	आत्मान्वेषी	
78.	विरागादर्श	
79.	विराग अर्चना	
	(पू. आचार्यश्री के प्रवचन पर आधारित साहित्य)	
80.	धर्म पियूष	30
81.	ऐसे चलो मिलेगी राह	40
82.	दूर नहीं है मंजिल	30
83.	उड़ रे पंछी	10

84. तीर्थंकर वर्धमान	15
85. पहले देव–पूजा फिर काम दूजा	25
86. तीर्थंकर ऐसे बनो (सोलहकारण प्रचवन)	60
87. तट की ओर	10
88. सिर्फ दो प्रवचन	10
89. इष्टोपदेश (प्रवचन)	
90. मानतुंग की अमरभक्ति (भक्तामर प्रवचन)	150
91. कल्याणक महोत्सव	20
92. दान तीर्थ	20
93. धर्म के दश सोपान	20
94. जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो	20
95. बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति	10
96. प्रवचन वर्षा	25
97. कर्त्तव्यमेव कर्त्तव्यं	25
98. श्रद्धा प्रसून (अष्ट अंग प्रवचन)	25
99. मोक्ष की राहें	25
100. विरागामृत–1	30
101. विरागामृत–2	
102. समाधि तंत्र (प्रवचन)	
103. समयोचित्, शिक्षायें भाग–1	20
104. समयोचित्, शिक्षायें भाग–2	20
105. समयोचित्, शिक्षायें भाग–3	20
106. विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी)	15
107. रजत पुष्प	51
108. कहानी सबसे पुरानी	50
109. अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी)	10
110. संस्कार की लहरें	20
111. चलो चलें प्रभु दर्शन को	30
112. आध्यात्मिक धर्म प्रवचन	30
113. घर–घर की कहानी	30
114. वारसाणुवेक्खा प्रवचन	125
115. पर्यूषण निधि	15
116. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार	
1. धर्मोपदेशामृतम्	200

117.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 2. दानोपदेशम्	40
118.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत्	50
119.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 4–5 एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम्	85
120.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 6. उपासक संस्कार	60
121.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम्	60
122.	पद्मनंदि पंचविंशति: अधिकार 8–9. सिद्धस्तुति एवं आलोचना	85
123.	आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन	10
124.	मेरी भावना–प्रवचन	
125.	फॉर यूथ प्रोग्रेस–1	30
126.	फॉर यूथ प्रोग्रेस–2	50
127.	रत्नकरण्डक श्रावकाचार भाग–1	100
128.	सामयिक पाठ – प्रवचन	85
129.	विराग संध्या	20
130.	स्वर्ण पुष्प	30
131.	षट्लेश्या प्रवचन अपनी–2 आभायें	
132.	ऐसे बनायें घर को स्वर्ग	
133.	क्यूँ इतना अभिमान है .... (मद प्रवचन)	30
134.	सिद्धों का खजाना (8 गुण प्रवचन)	30
135.	अपने नैतिक कर्त्तव्य	30
136.	श्रुतज्ञानवर्धक विधान	20
137.	भगवान महावीर विधान	
138.	अंग–अंग से झरता बोध (बाहुबली स्तुती)	

Video DVD

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयंती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की मात्रा
4. आर्यिका विशान्तश्री माताजी समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक

7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें श्रवणबेलगोला
14. दीक्षायें गाँधी नगर
15. दीक्षायें गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें किशनगढ़
17. 26 दीक्षायें उदयपुर
18. 25 दीक्षायें जयपुर
19. 8 दीक्षायें इन्दौर
20. स्वर्णिम जन्मजयंती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन
    (वारसाणुवेक्खा सामायिक पाठ)
    तत्वार्थ सूत्र, पदमनंदि पंचविंशतिका भाग 1–14
22. मातृभक्ति
23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

Audio DVD

1. श्यामा के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरुवर का जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विरागसागर नमोस्तु ते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरू के गायेंगे
9. जियो हजारो साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. स्वर्णिम जयंती याद रहेगी
14. हे सन्मति–सन्मति दो
15. प्रथम सुरि बुंदेलखण्ड के

16. पू. आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज पूजा
17. गुरू नाम की धूम मची है

साहित्य प्राप्ति स्थान

1. श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर, बताश बाजार, भिण्ड (म. प्र.) सम्पर्क सूत्र: पं वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220)
2. आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज) पुष्प विहार कॉलोनी, बीना–470113 जिला– सागर (म.प्र.)
3. विराग फाउण्डेशन, द्वारा– श्री अरुण कोटड़िया, II-A, विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद–380013 (गुजरात)
4. श्रीमती पुष्पा पाटनी, 574, शांति नगर, जैन मंदिर के सामने, गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.) मो. 09460765050
5. श्री मनीष पाटनी, नया बाजार, 54 धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज.) मो. 0941402306
6. श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु व्यास मेहता हॉस्पिटल के पास, मेहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475
7. राष्ट्रीय विराग युवा मंच, अध्यक्ष श्री राजेश जैन अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970

संगोष्ठी एवं स्मारिका साहित्य

बीना चातुमासिक स्मारिका	–	(1994)
सम्यग्दर्शन संगोष्ठी	–	तारंगा (2010)
विराग अनुभूति	–	लोहारिया (2011)
सर्वोदया टीका अनुशीलन	–	जयपुर (2012)
स्वर्णिम विरागांजलि	–	जयपुर (2012)
विराग पुष्प पुञ्ज	–	इन्दौर (2013)

परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज द्वारा लिखित, संपादित, संकलित एवं प्रवचन संबंधित साहित्य यहाँ हर समय उपलब्ध है।

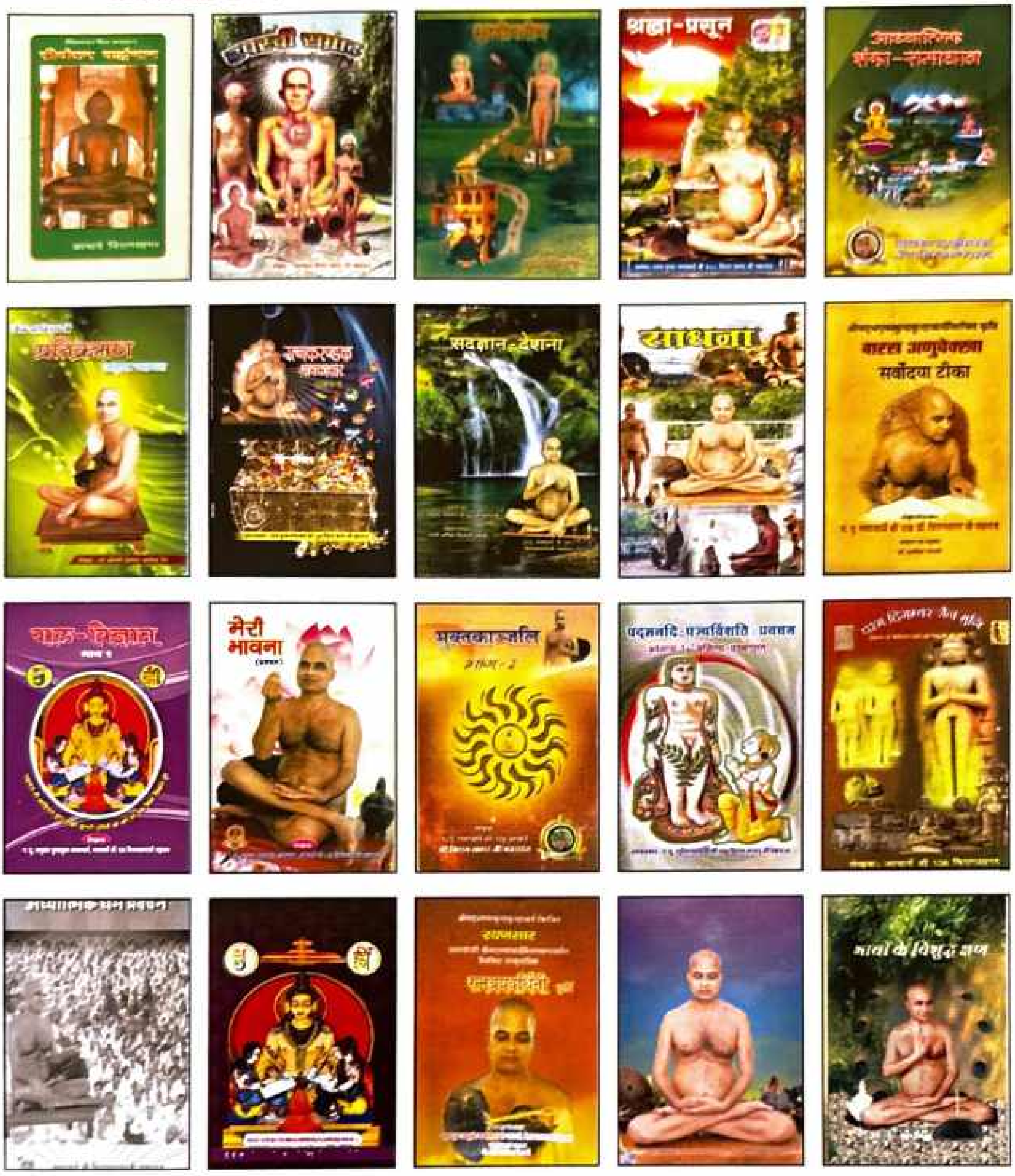

गुरु चरणों में शत्-शत् नमन्...

श्री नरेन्द्र-मंजू सेठी

श्री विजय-लता गंगवाल

नमनकर्ता : 1. श्रीमती मंजू-नरेन्द्र, साहित्य-नूपुर, मार्ग-चर्या सेठी, गया

2. श्रीमती लता-विजय, विशाल-रीटा, सिद्धार्थ-स्वाति (टीमा) गंगवाल, गया

श्रमण परम्परा में-दुर्लभ दर्शन
परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य श्री डॉ. विरागसागरजी महाराज चतुर्विध श्रमण-श्रमणी ;शिष्य-प्रशिष्योंद्ध के साथ